

नया नियम इतिहास साहित्य और धर्मशास्त्र

सत्र 11 मार्क लक्षण, पाप और बीमारी

डॉ. टेड हिल्डेब्रांट द्वारा

A. परिचय: मार्क की संक्षिप्तता [00:00-4:19]

A: A- D को मिलाएं; 00:00 -14:37 मार्क में चमत्कार

मुझे उम्मीद है कि आप सभी वसंत ऋतु की छुट्टियों का भरपूर आनंद ले रहे होंगे और मैं आपको मार्क की पुस्तक में वापस स्वागत करना चाहता हूँ। पिछली बार हम मार्क की पुस्तक की केवल परिचयात्मक सामग्री पर चर्चा कर रहे थे और हमने मनुष्य के पुत्र और उसके विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की, और यहाँ तक कि मनुष्य के पुत्र शब्द का उपयोग मसीह की मानवता के लिए किया जा रहा है, लेकिन दानियेल 7 के संदर्भ में भी, 'आकाश के बादलों पर आने वाला मनुष्य का पुत्र' और मनुष्य के पुत्र शब्द के देवता पहलू। इसलिए हमने मनुष्य के पुत्र शब्द पर चर्चा की जो मार्क की पुस्तक में एक बड़ा शब्द है। फिर जिस दूसरे शब्द पर हमने चर्चा की वह एक शब्द नहीं है बल्कि यीशु लोगों को यह बताने के लिए कहते हैं कि वे कौन थे और इसे मसीहाई रहस्य के रूप में लेबल किया गया है। हमने देखा कि शिष्यों को न बताने के लिए कहा गया था और राक्षसों को न बताने के लिए कहा गया था और राक्षसों को न बताने के लिए कहा गया था और हमने देखा कि प्रार्थना करने वालों, जो ठीक हो गए थे, उन्हें न बताने के लिए कहा गया था। हमने इस संभावना को समझाया कि जो लोग चंगे हुए थे, दुष्टात्माएँ और शिष्य, दो अलग-अलग कारणों से, यीशु ने उन्हें कुछ भी न कहने के लिए कहा था। जाहिर है, फिर, अपने पुनरुत्थान के बाद वह अपने शिष्यों से कहता है, "बाहर जाओ और सबको बताओ," लेकिन एक निश्चित बिंदु था जिसमें वे स्पष्ट रूप से समझ नहीं पाए और उनके पास वह समझ नहीं थी जो वह चाहता था कि वे इस तरह से बाहर जाएँ। तो, यह मसीहाई रहस्य और मनुष्य का पुत्र और मार्क की पुस्तक में कुछ शुरुआती बातें थीं।

अब आज मैं मार्क की पुस्तक में कुछ अन्य बातों पर चर्चा करना चाहता हूँ, मुख्य रूप से मार्क की पुस्तक की विशेषताएँ। मार्क की पुस्तक की एक प्रमुख विशेषता संक्षिप्तता है और आप देखेंगे,

जब आप इसे पढ़ेंगे, तो आपको पता चलेगा कि मैथ्यू में 28 लंबे अध्याय हैं, जबकि मार्क में केवल 16 अध्याय हैं जो कि बहुत ही प्रभावशाली और तेज़ हैं, जबकि ल्यूक में 24 अध्याय हैं। ल्यूक के अध्याय बहुत लंबे हैं। और इसलिए आपको यह बात समझ में आती है कि मैथ्यू में लगभग 1,068 श्लोक हैं, ल्यूक में लगभग 1,147 श्लोक हैं और मार्क में केवल 661 श्लोक हैं। इसलिए मार्क में ल्यूक की पुस्तक का लगभग आधा हिस्सा है, इसलिए, यह बहुत संक्षिप्त है। मैथ्यू में वे महान पाँच प्रवचन हैं, आपको याद होगा, जैतून का प्रवचन, पर्वत पर उपदेश, बारह को भोजना, राज्य के दृष्टांत, और सामुदायिक दिशा-निर्देश, ये पाँच प्रवचन, मैथ्यू में यीशु की प्रमुख शिक्षाएँ। मार्क ने एक को छोड़कर बाकी सभी को हटा दिया, उसने ओलिवेट प्रवचन पर थोड़ा सा लिखा है, जो अंत समय के बारे में है। यह मार्क 13 में था, और मैथ्यू 24 और 25 में समानांतर है। इसलिए, मार्क यीशु के शब्दों के साथ बहुत कुछ नहीं करता है, और मैं आपको इस पर कुछ आँकड़े देता हूँ, हालाँकि मैं नहीं चाहता कि आप उन्हें जानें, मैं बस चाहता हूँ कि आप इसे अपने दिमाग में रखें। मैथ्यू में लगभग 60% छंदों में यीशु के शब्द हैं, वे लाल-अक्षर हैं यदि आप लाल-अक्षर वाली बाइबिल करते हैं, और ल्यूक में लगभग 51% हैं। अब मार्क, और फिर से आपको इस बारे में सोचना होगा, मार्क का आकार आधा है और मैथ्यू में यीशु के बोलने के शब्दों के साथ 60% है, मार्क में केवल 42% है। तो आप सिकुड़न देखते हैं, यीशु के शब्दों में 22% से अधिक सिकुड़न। मार्क यीशु के कार्यों पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है। मैथ्यू यीशु के शब्दों पर ध्यान केंद्रित करता है। इसलिए, हम मार्क की पुस्तक में विकसित चमत्कारों को देखेंगे, और मैथ्यू कुछ चमत्कारों को संक्षिप्त करता है, जबकि मार्क चमत्कारों पर विस्तार से चर्चा करता है। मार्क यीशु के शब्दों को संक्षिप्त करके आपको उनका सारांश, संक्षिप्त सारांश देगा, जबकि मैथ्यू उन्हें लंबे प्रवचनों में विकसित करेगा। दूसरी ओर, मैथ्यू यीशु के चमत्कारों को संक्षिप्त करके आपको उनका संक्षिप्त प्रदर्शन देगा। तो, ये पुस्तक की मूल विशेषताएँ हैं जो मार्क को अन्य सुसमाचारों से अलग करती हैं।

बी. यीशु के चमत्कारों में तीन भागीदार: याचक [4:19-8:13]

मैं आगे यह देखना चाहता हूँ कि मार्क किस तरह चमत्कार करता है। तो यहाँ, हमने संक्षिप्तता

के बारे में बात की, मार्क ने शब्दों पर नहीं, बल्कि कार्यों पर ध्यान केंद्रित किया। यीशु "खाने के लिए बहुत व्यस्त है" जैसी छोटी-छोटी बातें जो यीशु और मार्क के चमत्कारों के बारे में बताती हैं। मैं देखना चाहता हूँ कि मार्क ने उन्हें कैसे विकसित किया, और मैं चमत्कारों को समझने के लिए इस तरह के त्रिकोणीय तरीके का उपयोग करना चाहता हूँ क्योंकि आप मार्क के चमत्कारों के करीब पहुँचते हैं। हम जो देखने जा रहे हैं वह तीन बुनियादी समूहों की बातचीत है। यीशु चमत्कार करेंगे और, हम यहाँ उपचार के बारे में बात करेंगे। आपके पास एक व्यक्ति आ रहा है, हम उन्हें याचक कहेंगे, जो यीशु से मदद माँगता है, चाहे वह वह व्यक्ति हो जिसे कोढ़ था या पीटर की सास, जिसे तेज़ बुखार था, या वह व्यक्ति जो अपंग था और उसके चार दोस्त थे जिन्होंने उसे यीशु के सामने उतारा। तो, आपके पास याचक हैं, जो यीशु के पास आते हैं, और मार्क की पुस्तक में जो दिलचस्प है वह यह है--सबसे पहले, आइए तीन प्रतिभागियों पर चलते हैं। तो, याचक हैं, जो उपचार के लिए आते हैं; आपके पास शिष्य हैं; और आमतौर पर शिष्य यीशु के साथ घूमते हैं। तो, आपके पास याचक हैं, जो मदद के लिए यीशु के पास आते हैं। शिष्य हैं, जो आमतौर पर यीशु को चमत्कार करते हुए देखते हैं। फिर आपके पास विरोधी हैं, आमतौर पर ये फरीसी होंगे, और इसलिए वे हमेशा यीशु को देखते रहेंगे ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि सब कुछ ठीक चल रहा है। तो मूल रूप से आपके पास ये तीन समूह हैं; उपचार के लिए पूछने वाले, शिष्य और विरोधी। ये तीन समूह यीशु के साथ अलग-अलग तरीकों से बातचीत करते हैं, जो इस त्रिभुज के बीच में शामिल होंगे, और वह उन तीनों के साथ बातचीत करेंगे।

तो, बहुत से चमत्कारों में यही होता है, और दिलचस्प बात यह है कि, मैं इसे पढ़ता हूँ, यीशु के पास आने वाले याचकों के बारे में। मरकुस में, जब याचक उपचार की माँग करने आते हैं, तो वे पहले से ही विश्वास दिखाते हैं। तो, यह दिलचस्प है, मरकुस 2:5, "जब यीशु ने उनका विश्वास देखा," जब लोग छत से खुदाई कर रहे थे और वे उस व्यक्ति को यीशु के सामने नीचे गिराने जा रहे थे, जो अपंग था, वे भीड़ से आगे नहीं जा सके, इसलिए वे छत पर गए और नीचे खुदाई की, उसे यीशु के पास गिरा दिया। यह व्यक्ति अपंग था। इसमें लिखा है, "जब यीशु ने उनका विश्वास देखा।" इसलिए वह इन याचकों की सराहना करता है, जो उपचार के लिए उसके पास आते हैं, क्योंकि वे विश्वास के साथ यीशु के पास उपचार की माँग करते हैं। यह मरकुस 2:5 था, अब मरकुस 5:34 में, यीशु यह कहते हैं: "बेटी,

तुम्हारे विश्वास ने तुम्हें ठीक कर दिया है। शांति से जाओ और दुख से मुक्त हो जाओ।" तो यहाँ एक महिला है जिसे खून बह रहा है, वह सभी डॉक्टरों के पास जा चुकी है, यीशु आराधनालय के शासक, याईर की बेटी को ठीक करने जा रहे हैं, और यहाँ, यह महिला भीड़ को धकेलते हुए सोच रही है, "काश मैं उसके वस्त्र को छू पाती," और वह उसे छूती है और वह ठीक हो जाती है। यीशु जानते हैं कि वह ठीक हो गई है, और यीशु उस महिला की ओर मुड़ते हैं और उसे पाते हैं, और उसे देखते हैं और उसके विश्वास के लिए उसकी सराहना करते हैं। "बेटी, तुम्हारे विश्वास ने तुम्हें ठीक कर दिया है।" हमने पहले कहा, यह एक तरह की शुद्धता/अशुद्धता की बात है, रक्तस्राव से ग्रस्त एक महिला जो अशुद्ध थी, यीशु को छूती है जो शुद्ध है, वह शुद्ध हो जाती है बजाय इसके कि यीशु अशुद्ध हो जाए जैसा कि आपने पुराने नियम में लैव्यव्यवस्था की पुस्तक में देखा होगा। लेकिन यीशु उसके विश्वास के लिए उसकी सराहना करते हैं। मार्क 5:36

में, यीशु फिर आराधनालय के शासक, याईर की ओर मुड़ते हैं, और मूल रूप से कहते हैं, "डरो मत। बस विश्वास करो।" और फिर वह कहते हैं, " *तालिथा* " *कौम* ", और लड़की उठ खड़ी होती है। इस प्रकार, ऐसा प्रतीत होता है कि यीशु अपने पास आने वाले याचकों की उनके विश्वास के लिए सराहना कर रहे हैं।

सी. यीशु के चमत्कार—शिष्य और विरोधी [8:13-10:34]

यह दिलचस्प है कि इसके विपरीत, जब ये चमत्कार घटित होते हैं, तो यीशु शिष्यों को कैसे चित्रित करते हैं? जब यीशु समुद्र को शांत करते हैं, तो वे अपने शिष्यों से कहते हैं, "तुम इतने डरे हुए क्यों हो?" मार्क की पुस्तक में शिष्य भयभीत या भयभीत प्रतीत होते हैं। "क्या तुम्हें अभी भी विश्वास नहीं है?" तो, यहाँ यीशु समुद्र को शांत करते हैं और वे भयभीत होने और विश्वास न रखने के लिए शिष्यों को फटकारते हैं। यह उन याचकों के विपरीत है जो आते हैं और यीशु उन्हें उनके विश्वास के लिए सराहते हैं। वे भयभीत थे, यीशु के शिष्य, डरे हुए और भयभीत थे और एक दूसरे से पूछते थे "यह कौन है, कि हवाएँ और लहरें भी उसकी आज्ञा मानती हैं?" मुझे लगता है कि हमने मैथ्यू की पुस्तक में दिखाया कि कैसे यह संभवतः अय्यूब की पुस्तक को संदर्भित करता है, जो यहोवा/यहोवा, समुद्र की

लहरों पर चलने वाले परमेश्वर के बारे में बात करता है। तो, वहाँ दिलचस्प अवधारणा है, शिष्य, "ओह, [तुम] कम विश्वास वाले।" जो लोग आ रहे थे, याचक, उनके विश्वास के लिए सराह रहे थे।

विरोध बढ़ता है और हम अध्याय 2 श्लोक 7 में इस तरह की चीजें देखते हैं जहां वह आदमी नीचे गिर जाता है, चार लोग अपने दोस्त को गिरा देते हैं जो अपंग है और यहां विपक्ष यीशु के बारे में यह कहता है। "यह आदमी इस तरह क्यों बात करता है? वह ईशनिंदा कर रहा है, कौन पापों को क्षमा कर सकता है सिवाय भगवान के?" तो यहां आपके पास विरोधी हैं, यीशु इस आदमी को यह कहते हुए ठीक कर रहे हैं कि तुम्हारे पाप क्षमा हो गए हैं। वह यह नहीं कहते कि "उठो और चलो," पहले, वह कहते हैं "तुम्हारे पाप क्षमा हो गए हैं", और फिर विरोधी मूल रूप से यह कहते हुए भड़क जाते हैं कि "यह आदमी कौन है? वह इस तरह क्यों बात करता है? वह ईशनिंदा कर रहा है। कौन पापों को क्षमा कर सकता है सिवाय भगवान के?" खैर, यही बात है। तो, उसके विरोधी, आप विरोधियों के शब्द सुनते हैं। मार्क 3:22 "दुष्टात्माओं के राजकुमार की सहायता से, वह दुष्टात्माओं को निकाल रहा है।" तो, आप देखते हैं कि विरोधी तब देखते हैं कि यीशु क्या करता है लेकिन इसे इस तरह से व्याख्या करते हैं जैसे कि वह शैतान की शक्ति से ऐसा कर रहा है। अतः ये विरोधी इन चंगाई की कहानियों में बिना किसी दया के प्रकट होते हैं, बल्कि यीशु पर उनके नियमों का पालन न करने के लिए आलोचना करते हैं या किसी अन्य शक्ति द्वारा ऐसा करने की निंदा करते हैं।

D. मार्क और जॉन में चमत्कार [10:34-14:37]

अब, एक आखिरी बात जो मैं इन चमत्कारों के साथ यहाँ करना चाहता हूँ, वह है मार्क के चमत्कारों की तुलना जॉन से करना। अब जॉन यह करता है कि, मूल रूप से, जॉन के पास "चमत्कार के संकेत" हैं। ये विशेष चमत्कार हैं, चमत्कार के लिए आने और चमत्कार के लिए तैयार होने के बारे में, और फिर जॉन के पास चमत्कार होता है और फिर यह नीचे आता है। अब, जॉन ने इन्हें स्थापित किया, उन्हें क्या कहा जाता है, और जॉन की पुस्तक में "चमत्कार के संकेत" हैं। लेकिन जॉन में जो दिलचस्प है वह यह है कि - मार्क में विश्वास, जो लोग यीशु के पास आते हैं वे विश्वास प्रकट करते हैं। लेकिन जॉन की पुस्तक में, विश्वास चमत्कार के बाद आता है। दूसरे शब्दों में, चमत्कार होने के बाद, तब लोगों का विश्वास होने का दावा किया जाता है। तो, आपको एक उदाहरण देने के लिए, जॉन 2:11,

"यह गलील के काना में यीशु द्वारा किए गए चमत्कारी संकेतों में से पहला है," और यहीं पर उसने पानी को शराब में बदल दिया। जॉन अध्याय 2, वह पानी को शराब में बदल देता है, जब दावत में, यीशु की माँ उसके पास आती है, और वह लोगों के लिए पानी को शराब में बदल देता है। यीशु कहते हैं कि इन पत्थर के डिब्बों को भर दो, जो सैकड़ों गैलन शराब के बराबर हैं, और इसलिए यीशु शराब बनाते हैं, और वे इसे उस व्यक्ति के पास ले जाते हैं जो शादी का संचालन कर रहा है और वे कहते हैं, "वाह, इसे देखो। यह अब तक का सबसे अच्छा है।" यीशु फिर यूहन्ना 2:23 में कहते हैं "अब, जब वह यरूशलेम में था, फसह के दौरान..." खैर, आइए पहले यूहन्ना 2:11 पर वापस जाएं और यह कहता है "इस प्रकार उसने अपनी महिमा प्रकट की और उसके शिष्यों ने उस पर विश्वास किया।" तो, यूहन्ना 2:11 में हम देखते हैं कि यीशु पानी को शराब में बदल देता है, और फिर यह कहता है कि चमत्कार का परिणाम यह है कि उसके शिष्यों ने उस पर विश्वास किया। कोई फटकार नहीं है, वहाँ कोई विरोधी नहीं है, लेकिन वे बस उस पर विश्वास करते हैं। यूहन्ना 2:23 में भी यही बात है: "अब जब वह यरूशलेम में था, फसह के पर्व के दौरान, बहुत से लोगों ने उसके द्वारा किए जा रहे चमत्कारी चिन्हों को देखा," और प्रतिक्रिया क्या थी? "चमत्कार (इन चमत्कारी चिन्हों) के परिणामस्वरूप, उन्होंने उसके नाम पर विश्वास किया।" अतः, यूहन्ना में चमत्कारों के लिए एक अलग व्यवस्था है।

मार्क में, लोग मूल रूप से विश्वास के साथ यीशु के पास आते हैं, और यीशु उनके विश्वास के लिए उनकी प्रशंसा करते हैं। जॉन चमत्कार का उपयोग करता है, और फिर चमत्कार समाप्त होने के बाद, एक प्रतिबिम्ब होता है। फिर शिष्यों ने उस पर अपना विश्वास रखा, और लोगों ने भी चमत्कारों के परिणामस्वरूप उस पर अपना विश्वास रखा। तो संकेत चमत्कार वे एक तरह से इसे स्थापित कर रहे हैं। मार्क में, संकेत और चमत्कारों का उपयोग परमेश्वर के राज्य के आगमन और इस दुनिया में परमेश्वर के राज्य के घुसपैठ को देखने के लिए किया जाता है। यीशु द्वारा यह चमत्कार करना दिखाता है कि उसके पास ऐसा करने का अधिकार है। वह शास्त्रियों और फरीसियों जैसा नहीं है; यीशु राक्षसों को भी आदेश दे सकता है। यीशु के पास बीमारियों पर शक्ति है, यीशु पानी पर चल सकता है, और यीशु हवा को शांत करने और लहरों को शांत करने के लिए कह सकता है। तो, यीशु राज्य में प्रवेश कर रहा है और यह बात आपको मार्क की पुस्तक में मिलती है जिसमें यीशु के पास अधिकार है, और

परमेश्वर के राज्य का आगमन है। खैर, मार्क इसे परमेश्वर का राज्य कहता है। अब, यह तो चमत्कारों की बात हुई, मैं बाद में एक विशेष चमत्कार पर वापस आना चाहता हूँ, हम उस व्यक्ति के बारे में बात करेंगे जो अपंग है, हम कुछ मिनटों में उस पर वापस आएं।

ई. मार्क में स्पष्ट विवरण [14:37- 16:13]

बी: संयुक्त उदाहरण; 14:37-25:50; मार्क का विशद यथार्थवाद

मार्क ने चीजों को जीवंतता और ग्राफिक विवरणों के साथ दर्ज किया है। वह इन छोटे विवरणों को उठाता है जो वास्तव में उसकी कहानी को जीवंत बनाते हैं और, उदाहरण के लिए, मैथ्यू 4 में, आप यीशु को बाहर जाते हुए देखते हैं और शैतान द्वारा उसकी परीक्षा ली जाती है, इसलिए आप शैतान को कहते हुए पाते हैं "इन पत्थरों को रोटी में बदल दो," और यीशु ने व्यवस्थाविवरण 4-8 को उद्धृत करते हुए कहा, "मनुष्य केवल रोटी से जीवित नहीं रहता।" वह उसे मंदिर के शिखर पर ले जाता है और कहता है "अपने आप को नीचे गिरा दो," क्योंकि शास्त्र कहता है "उसके स्वर्गदूत तुम्हें उठा लेंगे।" यीशु कहते हैं, "तुम अपने प्रभु परमेश्वर की परीक्षा मत करो।" फिर वह उसे पहाड़ पर ले जाता है, उसे दुनिया के सभी राज्य दिखाता है, "झुककर मेरी पूजा करो और मैं तुम्हें ये सभी राज्य दूंगा।" और यीशु फिर से व्यवस्थाविवरण से जवाब देते हैं, और इसलिए यह पुराना नियम है, शैतान द्वारा यीशु पर हमला करने के बीच। यीशु व्यवस्थाविवरण की पुस्तक से जवाब देते हैं। मार्क में, यह बहुत अलग है क्योंकि मार्क में ये छोटी-छोटी बातें हैं। इसलिए, मार्क में, वह कहता है, "यीशु जंगल में गया, और वह जंगली जानवरों के बीच था।" तो, आप सोचते हैं, ये जंगली जानवर कहाँ से आए? मार्क इस तथ्य को उठाता है कि यीशु जंगली जानवरों के साथ जंगल में है। यह अध्याय 1:13 में है। अब, मार्क 1:36 में, यीशु राक्षसों को बाहर निकालता है, और आम तौर पर यीशु बस, राक्षस को बाहर निकालता है और राक्षस बाहर निकल जाता है। मार्क इस तथ्य को उठाता है, "और आत्मा एक चीख के साथ बाहर आई," और इसलिए आपको यह अतिरिक्त छोटी "चीख" मिलती है। इसलिए मार्क के पास ये ग्राफिक, जीवंत विवरण हैं जो वहाँ पाए जाते हैं।

एफ. यीशु का क्रोध और मार्क का साहित्यिक काल [16:13-20:57]

अब, एक और बात जो मुझे बतानी चाहिए, मार्क 3:5 में यीशु को एक दिलचस्प तरीके से दर्शाया गया है, और यह बताता है कि यीशु के अंदर क्या चल रहा है। "यीशु ने उनसे पूछा, 'सब्त के दिन क्या उचित है?' याद रखें, वे सब्त के दिन यीशु पर चिल्ला रहे थे, 'अच्छा करना या बुरा करना? जान बचाना या मारना?' लेकिन वे चुप रहे और उसे जवाब नहीं दिया।" यह वह आदमी था जिसका हाथ सूख गया था।

तो यह आदमी यीशु के पास आता है, उसका हाथ सूख गया है और ये फरीसी देखना चाहते हैं, क्या वह सब्त के दिन इस सूखे हाथ वाले आदमी को ठीक करेगा? यीशु कहते हैं, "सब्त के दिन क्या उचित है, अच्छा करना या बुरा करना? जान बचाना या मारना?" वे जवाब नहीं देते, वे चुप रहते हैं," और फिर यीशु के बारे में यह कहा जाता है, "उसने गुस्से में उनकी तरफ देखा।" मार्क इस तथ्य को उठाता है कि वे चुप हैं। यीशु पूछते हैं "क्या सब्त के दिन अच्छा करना सही है?" और फिर वे उसके सवाल का जवाब नहीं देंगे। तो फिर यह कहता है, "यीशु ने गुस्से में उन पर नज़र डाली।" मुझे लगता है कि हमारी संस्कृति में कई बार; हमें इस गुस्से वाली बात से वाकई परेशानी होती है। तो, कोई बीच में आकर कहता है, "एक मिनट रुको। पहाड़ी उपदेश में, क्या यीशु ने यह नहीं कहा कि जो व्यक्ति अपने भाई से नाराज़ होता है, वह अपने दिल में हत्या करने के लिए प्रेरित होता है?" यहाँ, हम यीशु को क्रोधित देखते हैं। मार्क स्पष्ट रूप से कहता है, "यीशु क्रोधित था।" तो, आपको बहुत सावधान रहना होगा। और आप में से बहुत से लोगों ने मुझे पुराने नियम की कक्षा में बुलाया है, आप जानते हैं कि पुराने नियम में। भगवान कई बार क्रोधित होते हैं, यहाँ तक कि ज़मीन भी फट जाती है और इन सभी लोगों को निगल जाती है, और भगवान का गुस्सा निकलता है और लोगों पर आग के साँप निकलते हैं। तो, पुराने नियम में, आप भगवान के क्रोध को बहुत देखते हैं और बहुत से लोग इसे अनदेखा कर देते हैं और कहते हैं कि मूल रूप से यह सिर्फ पुराना नियम है। यीशु प्रेमपूर्ण, दयालु, करुणामय यीशु हैं। लेकिन यहाँ आप देख सकते हैं "और उसने क्रोध में उन पर नज़र डाली, और उनके हठीले दिलों को देखकर बहुत दुखी हुआ और उसने उस आदमी से कहा, 'अपना हाथ आगे बढ़ाओ,' और उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया और उसका हाथ पूरी तरह से ठीक हो गया। तब फरीसी, 'विरोधी, 'बाहर गए और हेरोदियों के साथ मिलकर षडयंत्र रचने लगे कि वे यीशु को कैसे मार सकते हैं।" यह मार्क 3

है, बहुत पहले। यह उस व्यक्ति को ठीक करने के बाद है जिसका हाथ सूख गया था।

तो, मार्क यीशु के इन आंतरिक विवरणों को उठाता है, कि यीशु उनसे नाराज़ था। और मैं बस इतना कहना चाहता हूँ कि मुझे लगता है कि क्रोध के लिए एक बिंदु है। हमारी संस्कृति में, मुझे लगता है कि हम किसी भी चीज़ पर बहुत ही सपाट रेखा पर चले गए हैं जो क्रोधित है, हम इसे अतिवादी या किसी प्रकार का अपमानजनक शब्द कहते हैं, लेकिन मुझे लगता है कि एक बिंदु है जिस पर किसी को क्रोधित होना चाहिए, और जब आप क्रोधित नहीं होते हैं, तो कुछ गलत होता है। इसलिए, यीशु भी क्रोधित होते हैं, और आपको सभी क्रोध को खत्म करने की कोशिश करते समय बहुत सावधान रहना होगा। अब, क्रोध के लिए एक समय होता है और एक समय नहीं, और यीशु यहाँ क्रोधित थे। तो, यहाँ यीशु हैं, और हम ईसाई हैं, और यहाँ तक कि यीशु भी उनके जिद्दी दिलों पर क्रोधित थे, और मुझे लगता है कि यह हमारे लिए भी एक आदर्श है। तो, ग्राफिक विवरण, मार्क उस तरह की चीज़ों को उठाता है।

यहाँ उनका पसंदीदा शब्द है, एक ग्रीक शब्द, जिसे अंग्रेजी में लाया गया है, *यूथ्स*, जहाँ मेरे ग्रीक छात्र इस शब्द को पहचान लेंगे, और इसका अर्थ है "तुरंत।" मार्क ने इस शब्द, *यूथ्स का* इस पुस्तक में 42 बार उपयोग किया है। मैं आपको कुछ संदर्भ दूंगा, अध्याय 1:12, 5:42, आदि, और इसलिए मार्क इस शब्द का बहुत उपयोग करता है, तुरंत। अब, जब आप इस शब्द का बार-बार उपयोग करते हैं तो क्या होता है? "तुरंत" शब्द का अर्थ है कि कथा तेजी से आगे बढ़ रही है, इसलिए यह तुरंत हुआ, और वह तुरंत हुआ और चीज़ें तेजी से आगे बढ़ रही हैं। यह मार्क के पसंदीदा शब्दों में से एक है, वह इसका 42 बार उपयोग करता है। तो, मार्क एक एक्शन बुक है।

वह वर्तमान काल का भी बहुत उपयोग करता है, जबकि मैथ्यू भूत काल का अधिक उपयोग करेगा, और आपके पास ग्रीक काल पर एक बड़ी बहस है और मैं उस सब में नहीं पड़ना चाहता लेकिन मार्क वर्तमान काल का बहुत उपयोग करता है और यह वास्तव में चीज़ों को आपके सामने लाता है, और इसलिए मूल रूप से वर्तमान काल चीज़ों को सामने लाता है, और मार्क यह तुरंत, तुरंत, वर्तमान काल, वर्तमान काल कर रहा है, जो चीज़ों को अधिक जीवंत, अधिक क्रियाशील बनाता है। तो, यह मार्क के कुछ विशिष्ट विवरण हैं।

जी. मार्क का यथार्थवाद - शिष्यों की समझ की कमी और यीशु का बढ़ई के रूप में होना

[20:57-25:50]

अब, मार्क का यथार्थवाद शिष्यों की सुस्ती और शिष्यों की वास्तव में समझ न होने में देखा जाता है। इसलिए, मार्क वास्तव में इस पर ध्यान देता है, कि कैसे वे वास्तव में दृष्टान्तों को नहीं समझते थे। यीशु की मृत्यु पर, यीशु अपनी मृत्यु का वर्णन करता है, और पतरस समझ नहीं पाता है और इसलिए पतरस यीशु को फटकारता है, और फिर उसने 9:32 में उनसे कहा, "मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथों पकड़वाया जाएगा। वे उसे मार डालेंगे और तीन दिन बाद, वह जी उठेगा।" यह यीशु द्वारा अपनी मृत्यु का वर्णन है। लेकिन फिर यह कहता है "लेकिन वे समझ नहीं पाए कि उसका क्या मतलब था। और वे डर गए।" क्या आपको डर की वह धारणा फिर से आती हुई मिलती है? "उससे इसके बारे में पूछने के लिए।" तो, वह कहता है, "ठीक है, मैं मरने जा रहा हूँ," और वे सभी बस सुन रहे हैं और सोच रहे हैं "वाह, यह सीमा से बाहर है, आप किसी मज़ेदार पार्टी में नहीं जाते और सभी को बताते हैं 'मैं मरने जा रहा हूँ, हाँ, और फिर मैं मृतकों में से फिर से जीवित होने जा रहा हूँ।'" खैर, जब आप लोगों के साथ ऐसी पार्टी में मृत्यु के बारे में बात करते हैं, तो सब कुछ शांत हो जाता है। शिष्यों को समझ नहीं आया और वे उससे इसके बारे में पूछने से डरते थे। और, अन्य बिंदुओं पर, शिष्यों ने इसके लिए उसकी आलोचना भी की। जब वे द्वारपाल की भूमिका निभाते हैं, और जब वे तय करते हैं कि कौन यीशु के पास जा सकता है और कौन नहीं, और विशेष रूप से छोटे बच्चों के साथ, जब वे यीशु के पास आ रहे होते हैं, और शिष्य छोटे बच्चों को पीछे धकेल रहे होते हैं और यीशु कहते हैं "छोटे बच्चों, राज्य ऐसा ही है।" और इसलिए, यीशु के पास अपने शिष्यों के लिए कुछ फटकार है। वे वास्तव में उसे समझ नहीं पाए, और मार्क इस तथ्य को उठाता है। यह दिलचस्प है कि, यहाँ ईसाई चर्च के नेता हैं, और यीशु परमेश्वर का पुत्र है जो नीचे आता है, मरता है, पुनर्जीवित होता है, और ये बारह प्रेरित हैं जिन्हें उसने चुना था, और फिर यहूदा अपने विश्वासघात के लिए मर जाता है, और फिर प्रेरितों के काम में, प्रेरित पौलुस को प्रेरित होने के लिए चुना जाता है, और फिर वे बारह को भेजते हैं, और यह दिलचस्प है, जब वे द्वारपाल होते हैं, तो यीशु उन्हें डांटते हैं और मूल रूप से कहते हैं, छोटे बच्चों को मेरे पास आने दो। इसलिए, शिष्य यीशु को बहुत अच्छी तरह से नहीं समझ पाए।

न केवल यीशु के शिष्यों को समझ में नहीं आया, बल्कि उनके अपने परिवार के लोग भी उन पर हमला करने लगे, और मार्क ने इसे स्थापित किया। मार्क 3:21, और उनके अपने परिवार के सदस्य - हम मरियम और जेम्स और जोसेफ के बारे में बात कर रहे हैं, और इसमें कुछ ऐसे लोगों के नाम सूचीबद्ध हैं जिन्हें हम अन्य अंशों से जानते हैं, वे उसे नियंत्रित करने आए, क्योंकि उन्होंने कहा कि वह पागल हो गया है। ये यीशु के परिवार के सदस्य हैं, और वे भी उसे समझ नहीं पाए, और उन्हें लगता है कि वह पागल हो गया है। मार्क 3:21 "जब उसके परिवार ने इसके बारे में सुना, तो वे उसे नियंत्रित करने के लिए गए, क्योंकि उन्होंने कहा 'वह पागल हो गया है।'" कानून के शिक्षकों ने कहा कि वह शैतानों के राजकुमार बेलज़ेबूब का है और इसी तरह वह राक्षसों को निकाल रहा है। इसलिए, उसके अपने परिवार ने उसे नहीं समझा, उसके शिष्यों ने उसे नहीं समझा, और मार्क ने इसे उठाया, और जाहिर तौर पर उससे पूछने का यह डर है, यह डर का विचार फिर से सामने आ रहा है। यह केवल मार्क की पुस्तक में है।

अन्य सुसमाचारों में वे कहते हैं कि यीशु एक बढ़ई का बेटा था, इसलिए आमतौर पर यह यूसुफ को बढ़ई के रूप में सूचीबद्ध करता है, इसलिए यीशु यूसुफ का पुत्र है, जो एक बढ़ई है। मार्क 6:3 की पुस्तक में, यह केवल यहाँ कहा गया है कि यीशु को स्वयं "बढ़ई" कहा गया था। इसलिए मार्क में, वह इस तथ्य को उठाता है कि यीशु को स्वयं एक बढ़ई के रूप में लेबल किया गया था। वे पिता और पुत्र थे, और हमारे दिनों में, आप कहते हैं, "ठीक है, बढ़ई वास्तव में अच्छा पैसा कमाते हैं।" लेकिन उन दिनों में, हम जानते हैं कि यीशु एक बहुत ही गरीब परिवार से थे, और जाहिर तौर पर कोई यूनियन वेतन नहीं था, लेकिन यीशु एक बढ़ई थे।

एक और विषय जो मार्क यहाँ उठाता है, जिसके बारे में हम पहले भी बात कर चुके हैं, वह है दुख पर जोर। मार्क मसीह को दुख भोगने वाले सेवक के रूप में देखता है, इसलिए मत्ती में मसीह राजा था, लेकिन मार्क में यीशु दुख भोगने वाला सेवक होगा। 8:31, 9:31, 10:31। ये वे जगहें हैं जहाँ मार्क यीशु के दुख का वर्णन करता है, इसलिए मार्क उस पर ध्यान देने जा रहा है।

एच. यीशु तूफान को शांत करता है [25:50-28:08]

सी: संयुक्त एच.के.; 25:50-37:07; मार्क में छोटे अक्षर

अब, हम छोटे पात्रों पर जाना चाहते हैं। जोएल विलियम्स द्वारा लिखा गया एक बहुत ही रोचक लेख है, जो एक महान व्यक्ति है, मैंने उनके साथ थोड़ा बहुत पढ़ाया है और उनके प्रति मेरे मन में बहुत सम्मान है। लेकिन उन्होंने एक लेख लिखा है जिसे आपने मार्क की पुस्तक में छोटे पात्रों पर पढ़ा है। यह एक शानदार लेख है और विचार करने योग्य है। यह ऑनलाइन उपलब्ध है, ऑडियो और पूर्ण पाठ मुफ्त है, और इसे डाउनलोड करने के लिए स्वतंत्र महसूस करें। बेशक कक्षा के लिए आपको इसे पढ़ना होगा, लेकिन यह छोटे पात्रों पर एक बढ़िया चर्चा है। अब, मैं जो करना चाहता हूँ, वह यह है कि मैं मार्क की पुस्तक में तीन नाव के दृश्यों को देखना चाहता हूँ। मार्क में तीन बार यीशु अपने शिष्यों के साथ नाव के दृश्य में हैं। आपको याद होगा कि मार्क पीटर का सुसमाचार लिख रहे हैं - हमने पहले पापियास की टिप्पणी से इसका उल्लेख किया था - मार्क पीटर का सुसमाचार लिख रहे हैं। इसलिए मैं इन तीन नाव के दृश्यों को देखना चाहता हूँ। नाव वाले दृश्य में आप देखेंगे कि सामान्यतः शिष्यों को डांटा जाता है, इसलिए जब यीशु नाव में होते हैं या कोई संकट घटित होता है, तो वे शिष्यों को डांटते हैं और फिर चमत्कार होता है।

तो, पहले तूफ़ान में, आप यीशु को तूफ़ान को शांत करते हुए पाते हैं। वे डरे हुए हैं, और फिर शिष्यों को उनके डर और उनके विश्वास की कमी के लिए डांटा जाता है, इसलिए वह शिष्यों से कहता है। "तुम इतने डरे हुए क्यों हो?" फिर से, मार्क की पुस्तक में आने वाले डर की धारणा पर ध्यान दें। "तुम इतने डरे हुए क्यों हो? क्या तुम्हें अभी भी विश्वास नहीं है?" और इसलिए यीशु उन्हें इस पहली कहानी में डांटते हैं, जहाँ वे तूफ़ान को शांत करेंगे, जब लहरें नाव पर आ रही हैं, और शिष्य डरे हुए हैं। वैसे ये लोग समुद्र के लोग हैं; जेम्स और जॉन मछुआरे थे, पीटर और एंड्रयू भी थे। इसलिए, वे पानी को अच्छी तरह से जानते हैं, यही उन्होंने अपनी आजीविका के लिए किया है। वे अभी भी वहाँ से आने वाली हवाओं के कारण डरे हुए हैं। हवाएं बहती हैं, गलील सागर के पश्चिमी किनारे से आने वाली हवाएं गलील सागर में नीचे की ओर झपट्टा मारती हैं और फिर भूमध्य सागर से आने वाली हवाएं एक प्रकार से बहती हैं, लगभग एक जेट इंजन की तरह, वे इस दर्रे में बहती हैं और नीचे की ओर आती हैं, और इस प्रकार आप इस प्रकार के तूफ़ानों को देख सकते हैं, यहां तक कि आज भी गलील सागर पर।

I. छोटे पात्रों में विश्वास और भय [28:08-30:53]

अब, जो बहुत दिलचस्प है, वह यह है कि जब वह शिष्यों को उनके डर और विश्वास की कमी के लिए फटकार लगाता है, ठीक उसी अध्याय 4 की कहानी के संदर्भ में, अध्याय 5 में गेरासेन राक्षसी की कहानी है, और फिर गेरासेन राक्षसी की कहानी, वे ठीक हो जाते हैं, और फिर लोग शहर में आते हैं और वे भी यीशु से डरते हैं, जिन्होंने इस आदमी को ठीक किया जिसे कोई भी नहीं रोक सकता था। तो, आप लोगों को भयभीत पाते हैं, और अपने डर के कारण यीशु से अपने क्षेत्र को छोड़ने के लिए कहते हैं। इसलिए, वे स्पष्ट रूप से अपने डर पर काबू नहीं पा सकते हैं। तो, इस डर के संदर्भ में कहानी के शांत होने और गेरासेन राक्षसी के बीच यह संबंध है। उस कहानी में, लोग यीशु से चले जाने के लिए कहते हैं; वे अपने डर पर काबू नहीं पा सकते हैं लेकिन वह व्यक्ति खुद जाहिर तौर पर ऐसा करता है।

याईर की बेटी, आराधनालय के नेता की बेटी, इसलिए वह यीशु के पास आता है और मूल रूप से कहता है, मेरी बेटी मरने वाली है, फिर वे आते हैं और उसे बताते हैं कि उसकी बेटी मर चुकी है, "स्वामी को अब और परेशान मत करो, यीशु को जाने दो, तुम्हारी बेटी मर चुकी है।" यीशु कहते हैं, "डरो मत, बस विश्वास करो।" याईर की बेटी की कहानी में भी वही दो विषय आते हैं: "डरो मत, बस विश्वास करो।" फिर यीशु जाता है और पीटर, जेम्स और जॉन को उसके पिता के साथ ले जाता है और अंदर जाता है और लड़की को मृतकों में से जीवित करता है। लेकिन वह कहता है, "डरो मत, केवल विश्वास करो," वही विषय फिर तूफान के शांत होने से आते हैं, डर और विश्वास, आप इसे गेरासीन राक्षसी और याईर की बेटी और फिर रक्तस्राव से पीड़ित महिला के माध्यम से प्रतिध्वनित होते हुए देख सकते हैं।

जब वह अपनी मरी हुई बेटी के साथ आराधनालय के शासक याईर के घर जा रहा था, तो रक्तस्राव से पीड़ित महिला अंदर आई और उसके कपड़ों को छू लिया और वहाँ क्या हुआ? वह उसे देखता है और उसके विश्वास की सराहना करता है, और वह डर जाती है। वह डर के मारे यीशु के पास आती है और वह डर जाती है और वह यीशु को छूती है और फिर भीड़ में सिमट जाती है। तब यीशु पलटकर कहते हैं "मुझे किसने छुआ?" शिष्य कहते हैं, "हाँ ठीक है, यीशु, आपको किसने

छुआ? हर कोई धक्का-मुक्की कर रहा है, हर कोई आपको छूना चाहता है।" और यीशु कहते हैं "नहीं, कुछ हुआ है," और वह इस महिला को देखता है जो उसके पास आने से डरती है क्योंकि मूल रूप से, वह डरी हुई है। वह जानती है कि वह ठीक हो गई है। तो, इन तीन कहानियों में, मैं यहाँ जो सुझाव दे रहा हूँ वह यह है कि यह तूफान की घटना हो रही है और यीशु अपने शिष्यों को उनके डर और विश्वास की कमी के लिए फटकार लगा रहे हैं। वह भय और विश्वास की कमी गेरासीन राक्षसी, जैरस की बेटी और रक्तस्राव से पीड़ित महिला की कहानी में प्रतिध्वनित होती है, जो इस कहानी के ठीक बाद आती है। तो, यहाँ आपके पास पहली नाव की कहानी है, और यह भय और विश्वास अगली तीन कहानियों में प्रतिध्वनित होता है।

जे. समझ और लघु पात्र [30:53-33:04]

अब, यहाँ एक है जहाँ यीशु पानी पर चलते हैं, और नाव में चढ़ जाते हैं और फिर से, यह मार्क 6:45 में है, वे कहते हैं, "'साहस रखो और डरो मत,' क्योंकि उन्होंने रोटियों को नहीं समझा था और उनके दिल कठोर हो गए थे।" उन्होंने रोटियों को नहीं समझा था और याद रखें कि यह उन चीजों में से एक है जिसके लिए यीशु ने शिष्यों को डांटा था, ठीक है, जरूरी नहीं कि डांटा हो लेकिन याद रखें, यह पाठ में है, "शिष्यों ने नहीं समझा।" तो, समझ की यह कमी सामने आती है, यीशु पानी पर चलते हैं, "'साहस रखो और डरो मत।' क्योंकि उन्होंने रोटियों के बारे में नहीं समझा था, उनके दिल कठोर हो गए थे।"

फिर, उसके ठीक बाद, कौन आता है? यह कनानी महिला आती है। तो वे रोटियों को समझ नहीं पा रहे हैं, उनके विश्वास में एक बाधा है, वे इन दो चीजों के बीच संबंध नहीं बना पाए थे। लेकिन फिर लेबनान से एक सीरो-फोनीशियन महिला, जो कि इस्राएल के उत्तर में है, वह यीशु के पास आती है और वह उन बाधाओं को पार करती है जहाँ शिष्यों के सामने बाधाएँ आती हैं और उन्हें पीछे धकेल दिया जाता है, यह महिला बाधाओं को पार करती है। वह आती है, उसकी बेटी में एक राक्षस है, और यीशु उसकी प्रतिक्रिया में प्रकट समझ से प्रभावित होते हैं। तो, याद रखें, यीशु ने कहा "'बच्चों के लिए भोजन लेना उचित नहीं है,' या यहूदियों के लिए, 'और इसे कुत्तों को देना,' और वह एक गैर-यहूदी के रूप में कहती है 'हाँ, प्रभु, लेकिन कुत्ते भी मेज से गिरा हुआ भोजन खाते हैं,' और यीशु कहते हैं, "वाह,

इस महिला में विश्वास है।" इसलिए, उसे वास्तव में एक आदर्श के रूप में इस्तेमाल किया गया है या इसे वास्तव में एक विरोधाभास के रूप में इस्तेमाल किया गया है। फिर से, आप देखते हैं कि याचक यीशु के पास आता है, और उसे उसके विश्वास के लिए सराहना मिलती है। यह वही समय है जब शिष्यों के साथ यह होता है, "तुम्हारा विश्वास कहाँ है? विश्वास की कमी क्यों है?" और याचकों, जो चंगे हो चुके हैं, और शिष्यों के बीच तनाव। यह वास्तव में यहाँ इस कहानी में सामने आता है, और फिर उसकी बेटी चंगी हो जाती है क्योंकि वह बाधा को पार कर लेती है, जो कि शिष्य स्पष्ट रूप से करने में असमर्थ हैं।

के. सुनना और देखना तथा लघु वर्ण [33:04-37:07]

फिर, तीसरी नाव की कहानी "रोटी नहीं" की कहानी है। यीशु उनसे पूछता है कि क्या वे रोटी लाए हैं, और वह वास्तव में उन्हें फरीसियों के खमीर के बारे में बताना और चेतावनी देना शुरू करता है, यह मार्क 8:18 में है। फिर यीशु उन्हें फरीसियों के खमीर या खमीर से सावधान रहने के लिए कहता है, और शिष्यों को यह समझ में नहीं आता है। वे आश्चर्य करते हैं, "वह फरीसियों के खमीर के बारे में क्यों बात कर रहा है? उसे भूख लगी होगी; हम कोई रोटी नहीं लाए। अरे नहीं! वह शायद भूखा है और वह हमें भोजन न लाने के लिए डांट रहा है।" वैसे, यह यीशु ही है जो 4,000, 5,000 को खिलाता है, और वे भोजन के बारे में चिंतित हैं। इसलिए, यीशु कहते हैं, "क्या तुम अभी भी नहीं देखते या समझते हो?" फिर से, यीशु उन्हें डांट रहे हैं क्योंकि वे अभी भी इसे नहीं समझते हैं। उसने 5,000 को खिलाया, उसने 4,000 को खिलाया, और यहाँ वे सोच रहे हैं कि वह भोजन के बारे में चिंतित है। फिर वह कहता है "तुम अभी भी नहीं देखते या समझते हो? क्या तुम्हारे दिल कठोर हो गए हैं?" फिर वह कहता है, "क्या तुम्हारे पास आँखें हैं लेकिन तुम नहीं देख पाते? और कान हैं लेकिन तुम नहीं सुन पाते?" अब, जो कोई भी पुराने नियम को जानता है, उसका सिर चकरा जाएगा--"बिंग"--यशायाह की भविष्यवाणी के साथ अध्याय 1 में कुछ ऐसा ही कहा गया है जहाँ परमेश्वर यशायाह से कहता है कि वह बाहर जाए और भविष्यवाणी करे, कि वे ये चीज़ें देखेंगे और सुनेंगे लेकिन वे नहीं समझेंगे, उनके दिल कठोर हैं। तो, परमेश्वर से निकलने वाला पूरा संदेश, यशायाह को एक ही तरह की बात बताई गई है। आप यशायाह से यह प्रतिध्वनि सुनते हैं। तो, दिलचस्प बात यह है कि शिष्यों को मूल रूप से

देखने के लिए फटकार लगाई जाती है लेकिन नहीं देखने और सुनने के लिए नहीं सुनने के लिए और अनुमान लगाइए कि कहानियों में क्या होता है? मार्क 8:18 से ठीक पहले यीशु ने बहरे आदमी को ठीक किया। यीशु कहते हैं "तुम्हारे पास कान हैं लेकिन तुम नहीं सुनते," तो यीशु ने एक बहरे आदमी को ठीक किया, और याद रखें उसने कहा, "खुल जाओ," और उस आदमी के कान खुल गए। और इसलिए यहाँ आप देख सकते हैं कि यीशु एक व्यक्ति को चंगा कर रहे हैं, और फिर अपने शिष्यों को डांट रहे हैं जब वे फरीसियों के खमीर के बारे में पूछ रहे थे, और सोच रहे थे कि वे कोई रोटी नहीं लाए, और वे कहते हैं, "तुम अभी भी नहीं सुनते, तुम नहीं सुनते कि मैं क्या कह रहा हूँ।" और उन्होंने बस एक सुनने की समस्या को ठीक कर दिया।

फिर अध्याय 8:18 के ठीक बाद, उस नाव के दृश्य के साथ, अंदाज़ा लगाइए क्या हुआ? यीशु ने बेथसैदा में एक अंधे आदमी को ठीक किया। तो, गलील के समुद्र के उत्तरी भाग में बसे शहर बेथसैदा में, यीशु ने इस अंधे आदमी को ठीक किया। तो, उसने एक आदमी के कान ठीक किए, उसके कान "खोले" और आँखें भी "खोले" ताकि अंधा आदमी देख सके, और फिर यीशु के साथ नाव पर शिष्य गए और उसने उन्हें न देखने और न सुनने के लिए डांटा। यीशु उस नाव के दोनों तरफ़ किसी को सुनने और देखने से ठीक करने जा रहा है। तो यह सब कहने का मतलब है कि मार्क ने इन चमत्कारों को खूबसूरती से पेश किया है, और वहाँ एक बड़ी विडंबना है। यहाँ एक आदमी है जो सुन नहीं सकता है, और यीशु उसके कान खोलते हैं, लेकिन उसके अपने शिष्यों के कान बंद हैं। यहाँ एक आदमी है जो बेथसैदा में नहीं देख सकता है, और यीशु उसे ठीक करने और उसे दृष्टि देने जा रहा है, लेकिन उसके अपने शिष्य नहीं देख सकते कि वह क्या कर रहा है, इसलिए उन्हें लगता है कि वह भोजन के बारे में बात कर रहा है।

इसलिए, मार्क ने इन तीन नाव दृश्यों को सुंदर तरीके से प्रस्तुत किया है। मार्क यीशु के कार्यों पर ध्यान केंद्रित करता है, लेकिन यह केवल यीशु के कार्यों को "यीशु ने कुछ विशेष चमत्कार किया" के संदर्भ में नहीं बताता है, मार्क इन बिंदुओं को घर तक पहुंचाने के लिए कहानी को प्रस्तुत करता है, भय और विश्वास के बारे में, सुनने और देखने के बारे में। इसलिए, यह मार्क की पुस्तक का एक बहुत ही सुंदर पहलू है।

एल. मार्क 15:39 में रोमन सेंचुरियन [37:07-39:45]

डी: एल.एन. को मिलाएं; 37:07-45-48; सेंचुरियन और मार्क का अंत

एक और बात, मार्क की पुस्तक के अंत में, मार्क को रोमनों को लिखा गया है, संभवतः एक रोमन चर्च, संभवतः 65 ई.पू. या उसके आसपास, बहुत पहले। मार्क एक प्रारंभिक सुसमाचार है, मैथ्यू और ल्यूक संभवतः बाद के सुसमाचार हैं, हालांकि इस पर बहस है। कुछ लोग मार्क को पहले रखते हैं, लेकिन बहुत से लोग मैथ्यू को पहले रखते हैं। लेकिन, दिलचस्प बात यह है कि मार्क में रोमन स्वाद है, हम इसे कुछ शब्दावली, कुछ विषयों और पीटर के मार्क के साथ रोम में होने से देखते हैं, जो उस समय था। दिलचस्प बात यह है कि 15:39 में सेंचुरियन, जिसे मार्क ने यीशु के क्रूस पर चढ़ने के समय उठाया था। शिष्य चले जा रहे हैं। पीटर कह रहा है कि वह उस आदमी को नहीं जानता, उसे अस्वीकार करता है, यहूदा उसे धोखा देता है। लेकिन मार्क की पुस्तक में कौन आता है? ठीक है, अगर आप रोमनों को लिख रहे हैं, तो आप किसके माध्यम से आना चाहते हैं? तो, 15:39 में सूबेदार, "जब सूबेदार यीशु के सामने खड़ा था..." तो, यहाँ यीशु क्रूस पर मर रहे हैं, और यह सूबेदार, तो शायद 100 सैनिक हैं। अधिकारी ने कितने लोगों को सूली पर चढ़ाया है, आपको क्या लगता है? इस आदमी ने एक के बाद एक सूली पर चढ़ते हुए देखा है। उसने यीशु के दोनों ओर दो लोगों को सूली पर चढ़ाया। यह आदमी काफी अनुभवी है, उसने पहले भी सूली पर चढ़ते हुए देखा है, और फिर यीशु चिल्लाते हैं, और यह कहता है, "सूबेदार जो यीशु के सामने खड़ा था, उसने उसकी पुकार सुनी, और देखा कि वह कैसे मर गया।" तो, सूबेदार ने शायद सैकड़ों-सैकड़ों लोगों को मरते हुए देखा, इसलिए वह यह जानता था लेकिन जब उसने यीशु को देखा और उसने देखा कि वह कैसे मर गया, तो सूबेदार का निष्कर्ष यह है: "निश्चित रूप से यह आदमी परमेश्वर का पुत्र था।" तो, यहाँ आपके पास एक रोमन सूबेदार है जो इसे समझता है। वह समझता है। तो, आप देख सकते हैं कि जब आप रोमन समुदाय को लिख रहे हैं तो यह कैसे ठीक रहेगा क्योंकि शिष्यों को भी यह समझ में नहीं आया। वे यीशु के साथ नाव में हैं, और फिर भी उन्हें यह समझ में नहीं आता। भोजन, मछली और रोटी खाने के बाद भी, उन्हें यह समझ में नहीं आता। शिष्य भयभीत हैं और वे समझ नहीं पाते और उनमें विश्वास नहीं है। यहाँ एक सूबेदार है, वह यीशु को देखता है, उसके चमत्कार नहीं देखता या उसकी विस्तृत शिक्षाएँ नहीं सुनता,

और जब उसने देखा कि वह कैसे मरा, तो उसे पता चला कि यह आदमी परमेश्वर का पुत्र था। यह रोमन सूबेदार है जो मार्क की पुस्तक में इसे समझता है। तो, यह फिर से आपको पुस्तक के रोमन स्वाद का थोड़ा सा हिस्सा दिखाता है, या, दूसरे शब्दों में, कि रोमन सूबेदार वह है जो इसे अन्य लोगों की तुलना में अधिक समझता है।

एम. मार्क का अंत - भय और विश्वास और लेखक [39:45-43:25]

तो, पुस्तक का अंत भी दिलचस्प है, और हम बाद में इस पर वापस आएंगे, लेकिन मार्क की पुस्तक के अंत में महिलाओं का डर और भागना। मार्क 16:8 में वास्तव में अचानक समाप्त होता है। हम दिखाएंगे कि एक पाठ्य भिन्नता है, और जब आपके पास NIV, या कोई आधुनिक अनुवाद, ESV, NRSV है, तो आप देखेंगे कि 16:8 के ठीक बाद एक ब्रेक लाइन है, और यह वास्तव में अचानक समाप्त होता है और यही कारण है कि कुछ लोगों को लगता है कि मार्क की पुस्तक से अंतिम पृष्ठ बस गिर गया। कुछ लोगों को लगता है कि पुस्तक वास्तव में वहीं समाप्त हो गई। लेकिन यह इतना अचानक अंत था, कि महिलाएँ भयभीत और डरी हुई थीं, लेकिन हम देखते हैं कि मार्क की पुस्तक में डर और आतंक और विश्वास की कमी का विषय इतनी बार आता है, यह दिलचस्प है। आपको आश्चर्य होता है कि क्या इन विषयों को एक साथ जोड़ा जा रहा है।

तो, मैं आपको अपना सिद्धांत बताता हूँ, लेकिन याद रखें, मैं इसे बना रहा हूँ, यह सिर्फ मेरे विचार हैं। तो, पुस्तक का अंत समाप्त होता है, और हमने नाव में शिष्यों को भयभीत देखा है और यीशु उन्हें डांटते हैं, और फिर पुस्तक का अंत, आप पाते हैं- यीशु मृतकों में से जी उठते हैं और महिलाएँ दिखाई देती हैं और भयभीत और घबराई हुई होती हैं कि क्या हो रहा है, और फिर मूल रूप से पुस्तक समाप्त होती है, ठीक श्लोक 8 पर, और फिर लंबा अंत इसे सुचारू रूप से आगे बढ़ाता है। लेकिन, यदि आप हमारी सर्वश्रेष्ठ पांडुलिपियाँ लेते हैं, तो वे श्लोक 8 पर समाप्त होती हैं, महिलाएँ भयभीत और भयभीत हैं। मुझे आश्चर्य है कि क्या मार्क खुद के लिए माफी माँग रहा है। क्या आपको याद है कि हम पहली मिशनरी यात्रा (1MJ) के अंत में बात कर रहे थे, मार्क और पॉल के बीच यह बड़ी बात थी? मूल रूप से, जॉन मार्क 1MJ पर बरनबास और पॉल के साथ गए थे, लेकिन जब वे तुर्की पहुँचे, तो

मार्क चले गए। यह इतना बड़ा मामला था कि पॉल ने कहा कि वह जॉन मार्क के साथ फिर कभी नहीं जाएगा। पॉल ने वास्तव में बरनबास के साथ अपने रिश्ते को तोड़ दिया, और उसके और बरनबास के बीच एक तरह का भाईचारा रिश्ता है। उसने और पॉल ने एक साथ मौत देखी थी, जब पॉल को तुर्की या एशिया माइनर के किसी शहर में लगभग मौत के कगार पर पत्थर मार दिया गया था, और बरनबास इस सब के दौरान उसके साथ था। जॉन मार्क की इस स्थिति के कारण उनका रिश्ता टूट गया, मुझे आश्चर्य है कि क्या जॉन मार्क ने जिन चीजों का सामना किया था उनमें से एक डर और आतंक का विचार था, और यही कारण है कि वह जंगली जानवरों का उल्लेख करता है, जब यीशु जंगल में "जंगली जानवरों के साथ" था, लेकिन उसके अंदर इस तरह का डरावना पहलू था, इसलिए वह उस विषय को पूरी किताब में चित्रित करता है, शिष्यों के डरने से लेकर विभिन्न अन्य लोगों तक। फिर, वह इन महिलाओं के डरने के साथ समाप्त होता है, इसलिए मुझे आश्चर्य है कि क्या यह मार्क के लिए एक तरह की क्षमा याचना है कि उसने 1MJ में क्यों छोड़ दिया, कि वह खुद डर गया था, लेकिन यह इतना असामान्य नहीं है क्योंकि शिष्य खुद डर गए थे। बारह शिष्य कई बार डरे हुए थे, और यीशु ने उन्हें डरने और विश्वास न करने के लिए डांटा। संभवतः मार्क खुद भी भयभीत हो सकता था और इसीलिए वह यरूशलेम वापस आ गया। तो, यह सिर्फ एक सिद्धांत या परिकल्पना है। यह बहुत दूर की बात है, इसलिए संभवतः नहीं, लेकिन मुझे आश्चर्य है। तो यह मार्क के दृष्टिकोण से है, लेखक अपने दृष्टिकोण और चीजों को देखने के तरीके के बारे में बता रहा है।

N. मार्क का अंत - भय और विश्वास और श्रोता [43:25-45:48]

लेकिन मुझे आश्चर्य है कि जिस समुदाय को वह लिख रहा है, रोमन, (हम नीरो की बात कर रहे हैं जो रोम में संभावित उत्पीड़न के बारे में बात कर रहा है) और मार्क यह सब देख रहे हैं, और महसूस कर रहे हैं कि रोमन ईसाइयों में से कई अपने अस्तित्व के इस बिंदु पर भयभीत थे। इसलिए, वे यहूदी धर्म के अधीन थे, वे यहूदी धर्म के तहत नाज़रीन संप्रदाय के अधीन थे, और जैसे-जैसे वे अलग-अलग पहचाने जाने लगे, यहूदी धर्म से दूर होने लगे, ईसाई बनने लगे, यहूदी धर्म के तहत नहीं बल्कि एक अलग धर्म के तहत, इनमें से कुछ लोग भयभीत थे, वे डरे हुए थे। इसलिए, मार्क समुदाय में इसे दर्शाता है, कुछ इस तरह कि "अरे, रोम में आप लोग भयभीत हैं; आप नहीं जानते कि क्या होगा,"

और यह संभवतः नीरो द्वारा शहर को जलाने और ईसाइयों पर इसका आरोप लगाने से पहले की बात है। नीरो के उत्पीड़न के परिणामस्वरूप ईसाइयों को मार दिया गया था। यह संभवतः उससे बहुत पहले की बात है, और लोग रोम से भयभीत हैं, और इसलिए मार्क इन विषयों को उन दर्शकों के कारण उठाता है जिनके लिए वह लिख रहा है।

तो, देखिए मैं क्या कर रहा हूँ, ये मेरी ओर से अनुमान हैं, मैं आपको यह दिखाने की कोशिश कर रहा हूँ कि लेखक इस प्रेरित पाठ में कैसे भूमिका निभाता है, और पाठक इस प्रेरित पाठ में कैसे भूमिका निभाते हैं। तो, लेखक और पाठक दोनों के लिए जिनके लिए वह लिख रहा है, यीशु का अनुसरण करने में डर और काँपने की यह धारणा और पर्याप्त विश्वास न होना मार्क और उस समुदाय के लिए बहुत बड़ी थीम है जिसके लिए वह लिख रहा है। मुझे लगता है कि जब भी आप साहित्य पढ़ते हैं, तो आपको पूछना चाहिए, हालाँकि मैं जानता हूँ कि हमारी संस्कृति में बहुत से लोग अब लेखक के बारे में ज़्यादा नहीं पूछते हैं, इसलिए लेखक को एक तरह से खारिज कर दिया जाता है। वे कहते हैं, "ठीक है, हम नहीं जानते कि लेखक कौन है," और वे इस पर बहुत आसानी से हार मान लेते हैं। मुझे लगता है कि लेखक को जानने से बहुत सारी अंतर्दृष्टि मिलती है, और यह आज की किताबों की तरह है, जितना बेहतर आप लेखक को जानते हैं, आप समझ सकते हैं कि उन किताबों में लेखक और वह कौन है, के कारण सभी तरह की चीज़ें चल रही हैं। लेखक और श्रोता, दोनों ही बहुत महत्वपूर्ण हैं, और मुझे लगता है कि इन दोनों के साथ, यदि आप लेखक और श्रोता को समझते हैं, तो यह आपके पढ़ने को समृद्ध बनाता है, और आप पाठ का अर्थ कैसे समझते हैं, यह भी बताता है। तो, यह सेंचुरियन है।

O. अपंग व्यक्ति—मरकुस 2 [45:48-49:03]

E: संयुक्त OS; 45:48-64:15; मार्क में उपचार

अब, मैं यहाँ एक बहुत ही खास अंश पर जाना चाहता हूँ, और यह यीशु द्वारा अपंग व्यक्ति को ठीक करना है, और मैं यहाँ इस मुद्दे को उठाना चाहता हूँ क्योंकि मार्क एक एक्शन बुक है, और मैं मार्क 2 में यीशु द्वारा अपंग व्यक्ति को ठीक करने के मुद्दे को उठाना चाहता हूँ। तो, मैं जो करना चाहता हूँ वह आपके लिए कहानी सुनाना है और फिर हम इसके धार्मिक बिंदु को समझने के लिए विशेष चीज़ों से गुजर सकते हैं। तो, यीशु घर में हैं, वे शिक्षा दे रहे हैं। बाहर, एक भीड़ है, हर कोई

अंदर जाने की कोशिश कर रहा है। ये लोग आते हैं, वे इस आदमी के चार दोस्त हैं, और वह आदमी अपंग है। हमें नहीं पता कि वह अपंग क्यों है, हम केवल इतना जानते हैं कि वह अपंग है और वह एक चटाई पर है। चार लोग उसे यीशु के पास लाते हैं लेकिन भीड़ के कारण वे अंदर नहीं जा पाते हैं, और, ज़ाहिर है, उन दिनों यह विकलांगों के लिए सुलभ नहीं था, और इसलिए ये लोग जो करते हैं, वे आसानी से मना नहीं कर सकते हैं। तो, याद रखें कि हमने कहा कि वे बाधाओं को पार करते हैं? तो, यहाँ हमारे पास है, याचक आता है, और याचक बाधा को पार करता है। बाधा क्या है? बाधा यह है कि वह चल नहीं सकता और हर जगह लोग हैं इसलिए वह यीशु के पास जाने के लिए अंदर नहीं जा सकता। तो, वह एक बाधा को पार करने जा रहा है। वास्तव में, यह आज के लोगों के लिए भी एक बहुत अच्छी बात है, जैसे, क्या आप "नहीं" को उत्तर के रूप में लेते हैं, या आप बाधाओं को पार करते हैं? क्या आप इसके लिए जाते हैं? तो, अगर कोई बाधा डालता है, तो क्या आप उसके ऊपर, उसके नीचे, या उसके माध्यम से जाते हैं? क्या आप इसे पूरा करते हैं चाहे कोई बाधा हो या न हो? तो, ये लोग इस बाधा को देखते हैं और वे जानते हैं कि वे अंदर नहीं जा सकते लेकिन वे सोचते हैं, "हम हतोत्साहित नहीं होंगे," और वे अपने दोस्त को यीशु के पास ले जाएंगे क्योंकि उनका मानना है कि यीशु इस व्यक्ति को ठीक कर सकते हैं।

इसलिए, वे छत पर चढ़ जाते हैं, और छत को खोद देते हैं। अब, ये छतें मिट्टी के घर हैं, संभवतः छत पर पत्थर और मिट्टी से बने हैं, और शायद ऊपर मिट्टी से ढकी हुई शाखाएँ हैं, हमारी 25 साल पुरानी छत नहीं। इसलिए, वे इसे खोदते हैं, और आप कल्पना कर सकते हैं कि यीशु ने यह सब मिट्टी और प्लास्टर गिरते हुए देखा, और वे इस आदमी को यीशु के पास ले आए। यीशु उनके विश्वास को देखता है, और वहाँ मौजूद हर कोई, आपके पास कौन है? आपके पास शिष्य हैं, आपके पास विरोधी हैं, और आपके पास यह आदमी है जो बस नीचे गिर गया।

यीशु उस व्यक्ति को देखता है, और हर कोई यीशु से यह कहने की अपेक्षा कर रहा है - हालाँकि यीशु कभी भी वह नहीं करता जो हर कोई अपेक्षा करता है, यीशु हमेशा एक तरह से सहज, सौभाग्यशाली यीशु है जो हमेशा अप्रत्याशित कार्य करता है। इसलिए, हर कोई यीशु से यह कहने की अपेक्षा कर रहा है, "ओह, मैं तुम्हारा विश्वास देख रहा हूँ! अपनी चटाई उठाओ और उठो, चलो और

चले जाओ!" इसी तरह हर कोई यीशु से इस व्यक्ति को ठीक करने की अपेक्षा कर रहा है। यीशु लोगों को ठीक करता है। इसलिए वे उसके पास आ रहे हैं, ठीक होने के लिए। लेकिन ऐसा कहने के बजाय, यीशु कहते हैं, "तुम्हारे पाप क्षमा किए गए हैं।" अचानक, यह इस पूरी चिकित्सा को दूसरे आयाम में ले जाता है। "तुम्हारे पाप क्षमा किए गए हैं।" सभी विरोधी प्रतिक्रिया करते हैं, "पापों को कौन क्षमा कर सकता है सिवाय केवल परमेश्वर के?" यही बात है, यीशु परमेश्वर हैं, वे पापों को क्षमा कर सकते हैं। इसलिए, यह अधिकार के बारे में बात कर रहा है, मार्क इसका उपयोग यह दिखाने के लिए कर रहा है कि यीशु एक ऐसे व्यक्ति थे जो अधिकार के साथ बोलते थे। यीशु कहते हैं, "बेटा, तुम्हारे पाप क्षमा किए गए हैं।"

पी. बीमारी और पाप 1 कुरिन्थियों और प्रेरितों के काम [49:03-52:59]

मैं पीछे हटकर यह सवाल पूछना चाहता हूँ कि पाप और बीमारी के बीच क्या संबंध है? अब, आप इस विषय पर एक पूरा पाठ्यक्रम ले सकते हैं, लेकिन मैं सिर्फ पवित्रशास्त्र के माध्यम से आगे बढ़ना चाहता हूँ और पाप और बीमारी के बीच संबंध के बारे में सोचना चाहता हूँ और मैं इस तरह के सवाल पूछना चाहता हूँ: क्या बाइबल में कभी पाप और बीमारी के बीच कोई संबंध बताया गया है? क्या आपके पास ऐसे किसी व्यक्ति का उदाहरण है जिसके बारे में आप सोच सकते हैं कि बीमारी या मृत्यु उसके पाप का परिणाम थी? क्या पाप और बीमारी के बीच कोई संबंध है? खैर, कुछ लोग कहते हैं, "नहीं," मैं ज़रूरी तौर पर यह सुझाव नहीं दे रहा हूँ कि कोई संबंध है, मैं बस यह पूछ रहा हूँ कि क्या कभी-कभी पाप और बीमारी के बीच कोई संबंध होता है?

1 कुरिन्थियों 11:27-30. जैसे ही मैं 1 कुरिन्थियों 11 कहता हूँ, आपके दिमाग में क्या आता है? यह प्रभु के भोज के बारे में बात कर रहा है, 1 कुरिन्थियों 11, और यहाँ, प्रभु के भोज में, यह लोगों को चेतावनी देता है कि वे प्रभु के भोज को अनुचित तरीके से न खाएँ। अब, इस पर एक बड़ी चर्चा होनी है, अगर आप वास्तव में कुछ दिलचस्प चर्चाओं में रुचि रखते हैं, तो 1 कुरिन्थियों की पुस्तक पर डेव मैथ्यूसन की शिक्षा देखें, यह बिल्कुल सही है, और बिल्कुल शानदार है। पॉल कहते हैं कि उनमें से कुछ ने प्रभु के भोज को अनुचित तरीके से खाया था। फिर उसने कहा, "इसीलिए तुममें से बहुत से लोग कमज़ोर और बीमार हैं, और तुममें से बहुत से लोग सो गए हैं।" 1 कुरिन्थियों 11:30, "सो गए,"

सो गए क्या है? खैर, "सो गए" मृत होने के लिए एक व्यंजना है। दूसरे शब्दों में, उनमें से कुछ इसलिए मर गए क्योंकि उन्होंने प्रभु के भोज को अनुचित तरीके से खाया था। क्या पाप और उनकी बीमारी के बीच कोई संबंध था? पॉल कहते हैं, "इसलिए, क्योंकि तुमने अनुचित तरीके से खाया है, तुममें से कुछ कमज़ोर हैं, तुममें से कुछ बीमार हैं, और तुममें से कुछ सो गए हैं।" उनके पाप और बीमारी के बीच एक संबंध है। मुझे इनमें से कुछ चीजों पर एक तरह की तेज़ गति से चर्चा करने दें। हनन्याह और सफ़ीरा, प्रेरितों के काम 5 में (ध्यान दें कि ये दोनों उदाहरण नए नियम में हैं)। हनन्याह और सफ़ीरा आए, शुरुआती चर्च के दौरान हर कोई साझा कर रहा था और सब कुछ साझा कर रहा था, लोग अपना सामान बेच रहे थे और गरीबों को दे रहे थे और इस तरह की चीजें। हनन्याह और सफ़ीरा ने अपनी जगह बेच दी और पैसे प्रेरितों को दे दिए और उन्होंने पूछा कि क्या उसने उन्हें अपना सारा पैसा दे दिया। उसने कहा कि बस इतना ही, उसने सब कुछ दे दिया। फिर अचानक, वह भगवान से झूठ बोल रहा था और वह मर गया। उसकी पत्नी आती है, और वे उससे भी पूछते हैं, कि क्या उसने अपना सारा पैसा चर्च को दे दिया है। वैसे, उसे कुछ भी देने की ज़रूरत नहीं थी, लेकिन जब वह यह कहते हुए आई कि उसने ऐसा किया है, तो वह झूठ बोल रही है। उन्हें ऐसा करने की ज़रूरत नहीं थी। इसलिए, वह कहती है, "हाँ," और शिष्य कहते हैं, "जिन पैरों ने तुम्हारे पति को बाहर निकाला, वे तुम्हें भी बाहर निकालेंगे।" सफ़ीरा गिर गई, वह भी मर गई। पाप और बीमारी के बीच संबंध? उन्होंने झूठ बोला, वे मर गए। हनन्याह ने झूठ बोला, वह मर गया। सफ़ीरा झूठ बोलती है, वह मर गई।

प्रश्न: बीमारी और पाप - हारून के बेटे और मरियम [52:59-58:50]

आप में से कुछ लोगों को पुराने नियम में, लेवितस की पुस्तक में याद होगा - हमारी सबसे प्रसिद्ध पुस्तक नहीं - लेकिन लेवितस की पुस्तक, लेवितस 10 में, वे भगवान के लिए एक अनधिकृत आग चढ़ाते हैं, और क्या होता है? भगवान से आग निकलती है और हारून के दो बेटों को भस्म कर देती है। वे मर जाते हैं, भगवान द्वारा आग में जला दिए जाते हैं। क्या कोई संबंध है? हाँ, उन्होंने भगवान की पवित्रता का उल्लंघन किया, और जो भगवान ने कहा था उसे अपवित्र किया। वे मर गए। संख्या 12 में मरियम। वह मूसा के मामले में आ रही है। अब आपको याद रखना होगा कि मरियम मूसा की बड़ी बहन है; मूसा मरियम का छोटा भाई है। वह शायद मूसा से 15 या 16 साल बड़ी थी। तो, वह बड़ी

बहन है, जब मूसा नील नदी में एक टोकरी में तैर रहा था, तो वह उसकी देखभाल करने वाली थी। इसलिए, वह परेशान है कि मूसा को ये सब चीजें मिल रही हैं और उसने एक कुशीत महिला से शादी की है, और वह इस पर आपत्ति जताती है। संख्या 12 में, और मूल रूप से भगवान नीचे आते हैं और कहते हैं, "एक मिनट रुको, मरियम, क्या तुम जानती हो कि तुम किससे बात कर रही हो?" हारून और मरियम मूसा पर हमला करते हैं, और मूसा पृथ्वी पर सबसे अधिक पराजित व्यक्ति है, यहाँ तक कि उसके भाई और बहन भी उसका साथ नहीं देते। उसके पीछे हर समय ये सभी यहूदी लोग हैं और पिछले अध्याय में उसे इससे परेशानी होती है, और अब उसके अपने भाई और बहन भी उसके पीछे हैं। मूसा पृथ्वी पर किसी और से ज़्यादा पूरी तरह से पराजित और पीड़ित महसूस कर रहा है।

इसलिए, भगवान नीचे आते हैं और कहते हैं, "मरियम, जब मैं तुमसे और भविष्यवक्ताओं से बात करता हूँ, तो मैं सपनों और दर्शन के माध्यम से बात करता हूँ। लेकिन जब मैं मूसा से बात करता हूँ, तो मैं आमने-सामने बात करता हूँ, तो ऐसा कैसे हो सकता है कि तुमने मूसा के खिलाफ़ एक शब्द भी कहा? मूसा मेरा आदमी है, मरियम।" और, जब बादल चला गया, तो क्या हुआ? मरियम कोढ़ से पीड़ित है, बर्फ़ की तरह सफ़ेद। मुझे लगता है कि यहाँ शब्दों का खेल है, मूसा की काली कुशीत पत्नी, और मरियम सफ़ेद हो गई है। ओह, मरियम, क्या तुम्हें सफ़ेद रंग पसंद है? मैं तुम्हें सफ़ेद, बर्फ़ जैसा सफ़ेद, कोढ़ जैसा सफ़ेद रंग दूँगा, और वह पूरी तरह से सफ़ेद हो जाती है। क्यों? क्योंकि उसने मूसा, परमेश्वर के सेवक, प्रभु के सेवक के विरुद्ध बात की थी। तो, वहाँ जो है वह यह है कि उसने पाप किया, फिर न्याय हुआ, और फिर थोड़ी देर बाद वह ठीक हो गई। तो, वह मरियम है।

यहाँ एलीशा और नामान भी हैं, वह सीरिया से आया है और उसे कोढ़ है, और एलीशा कहते हैं, नीचे जाकर जॉर्डन नदी में नहाओ। लड़के कहते हैं, "अच्छा, सुनो, जॉर्डन नदी एक गंदी नदी है। मैं वहाँ नहीं जा रहा हूँ, हमारे पास सीरिया में अच्छी नदियाँ हैं। मैं जॉर्डन नदी में क्यों जाऊँगा? लेकिन, वह अंततः नीचे जाता है, सात बार डुबकी लगाता है, ऊपर आता है, वह ठीक हो जाता है। और इसलिए वह वापस आता है और एलीशा इस सीरियाई से कोई पैसा नहीं लेता, वह उससे एक पैसा भी नहीं लेता। एलीशा का सेवक [गेहजी] कहता है, वह आदमी सीरियाई था, हमें उससे कुछ पैसे माँगने चाहिए थे। इसलिए, वह उसके जाने के बाद उसके पीछे दौड़ता हुआ जाता है और वह नामान से

कहता है, “अरे, हमारे घर पर कुछ मेहमान आए हैं, हमें कुछ कपड़े और कुछ पैसे चाहिए।” नामान बिना सोचे समझे उसे दे देता है, क्योंकि वह ऐसा करने में खुश है क्योंकि उसका कोढ़ ठीक हो गया है। वह उसे लूट का माल देता है और वह एलीशा के पास वापस आता है और एलीशा से इसे छिपाने की योजना बनाता है। परमेश्वर का आदमी एलीशा कहता है, “मैंने तुम्हें जाते देखा,” और इसलिए वह कहता है, नामान पर जो कोढ़ था वह अब तुम पर है, और इसलिए वह अब सोच रहा है कि उसने सीरियाई से कुछ लूटा है और नामान पर जो कोढ़ था वह उसे मिल गया। तो, फिर से, पाप और बीमारी का संबंध है। वह लालची था और पैसे के पीछे भागा जबकि उसे नहीं जाना चाहिए था, और अब उसे कोढ़ हो गया है।

जॉन द बैपटिस्ट के पिता, न्यू टेस्टामेंट से सिर्फ एक उदाहरण जो कि काफी हास्यप्रद है जैसा कि हम ल्यूक की पुस्तक में देखेंगे। जॉन द बैपटिस्ट के पिता को यह विश्वास करने में परेशानी होती है कि उनकी पत्नी, एलिजाबेथ, जब वे बूढ़े हो जाएंगे तो एक बच्चा पैदा करने वाली है। उन्हें विश्वास करने में परेशानी होती है, इसलिए देवदूत कहते हैं, “क्या सच में? तुम्हें इस पर विश्वास करने में परेशानी हो रही है? इसे देखो, जब तक बच्चा पैदा नहीं हो जाता, तुम बोल नहीं पाओगे।” इसलिए जकर्याह गुंगा हो जाता है और जब तक बच्चा पैदा नहीं हो जाता, वह बोल नहीं पाता। तो, फिर से, वहाँ पाप और बीमारी है।

प्रेरितों के काम 12:22 में हेरोदेस उठता है, मुझे लगता है कि यह कैसरिया में समुद्र तट पर था, और इसलिए सूरज उगता है और वह खड़ा होता है, और उसके पास एक धातु का वस्त्र होता है - शायद माइकल जैक्सन जैसा कुछ - और वह वहाँ ऊपर होता है और अचानक, वह चमकने लगता है, और सभी लोग देखते हैं कि वह चमक रहा है और उसके पास यह सब धातु की चीज़ें हैं और वह चमक रहा है। वे देखते हैं और सोचते हैं, ठीक है, वह एक देवता होना चाहिए, और हेरोदेस कुछ भी नहीं कहता है, जबकि वे कहते हैं, “वह एक देवता होना चाहिए।” फिर यह कहता है कि उसके अहंकार के कारण, भगवान ने उसे कीड़े मारे और वह मर गया। जाने का यह अच्छा तरीका नहीं है। तो, उसके अहंकार में पाप था। भगवान उसे प्रेरितों के काम 12 में नीचे ले जाता है।

अब, जेम्स कहते हैं, यह अधिक सैद्धांतिक है, लेकिन जेम्स कहते हैं, “प्राचीनों को बुलाओ,

और वे किसी के लिए और पाप की बीमारी के लिए प्रार्थना करेंगे," जेम्स 5:24 में। साथ ही, 1 पतरस 2:24, "उसके कोड़ों से हम चंगे हो गए"। यह यशायाह 53 पर वापस जाता है। मैं बस इतना कहना चाह रहा हूँ कि, पवित्रशास्त्र में, क्या पाप और बीमारी के बीच कोई संबंध है? अब, आपको थोड़ा सा झुंझलाहट होनी चाहिए, और यह ठीक है, यही मैं उम्मीद कर रहा था। पाप चार स्तरों पर हमला करता है। यीशु के अधिकार और बढ़ते विरोध, उपचार, पाप को क्षमा करने का प्रश्न, और फिर विरोधी यहाँ यीशु पर प्रतिक्रिया करेंगे, और ऐसा करने में, कहानी का संदर्भ कि यीशु ने उपचार से क्षमा की ओर क्यों रुख किया।

पाप के चार पहलू [58:50-64:15]

तो, मैं बस थोड़ा नीचे जाना चाहता हूँ। यीशु ने उपचार से क्षमा की ओर क्यों रुख किया? यह कैसे सच है कि पापों को क्षमा करना उपचार से आसान है? और फिर इस प्रश्न पर आते हैं जिस पर हम अभी हैं: पाप और बीमारी, क्या कोई संबंध है? इसका उत्तर हाँ होगा; और यह भी नहीं होगा। अब, मैं पाप के चार अलग-अलग पहलुओं को देखना चाहता हूँ और यह कैसे पाप और बीमारी के बीच संबंध में भूमिका निभाता है। तो, इसके 4 अलग-अलग पहलू हैं। अब, सबसे पहले, आपके पास आदम का पाप है। "हम सभी पापी हैं," रोमियों 5, "आदम में।" आदम ने पाप किया और इस प्रकार हम सभी उसके परिणाम हैं, सेब पेड़ से दूर नहीं गिरता। हम आदम और हव्वा के वंशज हैं, और पापी हैं। तो सामान्य तौर पर, हम एक पापी दुनिया में रहते हैं, आदम के पाप के परिणामस्वरूप लोग बीमार पड़ते हैं। यहाँ पूरा ब्रह्मांड बदल गया था, और इसलिए आदम के पाप के परिणामस्वरूप, हम बीमार पड़ते हैं।

लेकिन इस पाप और बीमारी के संबंध का एक सामुदायिक पहलू भी है। क्या किसी को याद है कि पलिशतियों ने सन्दूक कब जल दिया था? यह 1 शमूएल 4 और 5 में है, 2 इतिहास 7:13 में भी और उसके बाद, राष्ट्रों पर न्याय। तो, परमेश्वर के सन्दूक पर कब्ज़ा कर लिया गया, इसलिए पलिशतियों ने परमेश्वर के सन्दूक पर कब्ज़ा कर लिया, वे इसे शहर-शहर भेजते हैं। जहाँ भी सन्दूक जाता है, लोग बीमार हो जाते हैं। बहुत से लोग सोचते हैं कि यह बुबोनिक प्लेग था, यह चूहों और लोगों की मृत्यु से जुड़ा है। तो मूल रूप से, जहाँ भी सन्दूक गया, लोग बीमार हो गए और मर गए। तो, पलिशती राष्ट्र पर

न्याय हुआ। यही मैं यहाँ सुझाने की कोशिश कर रहा हूँ। यह सिर्फ़ व्यक्तियों के लिए नहीं था, बल्कि पूरे राष्ट्र के लिए था जो इसके लिए पीड़ित था।

एक और बात जो दिमाग में आती है, क्या आपको याद है जब हम 2 शमूएल 24 में थे, मुझे लगता है, कि दाऊद ने लोगों की गिनती की थी। जब दाऊद ने लोगों की गिनती की, तो पूरे राष्ट्र का न्याय किया गया। तो, दाऊद को वहाँ तीन विकल्प दिए गए, वह क्या करने जा रहा था? तो, तीन साल, तीन महीने, या तीन दिन की महामारी थी, और दाऊद ने कहा, "मैं मनुष्य के बजाय भगवान के हाथों में पड़ना पसंद करूँगा," इसलिए वह महामारी को स्वीकार करता है। तो महामारी इस्राएल राष्ट्र पर गिर गई। तो, राष्ट्र का न्याय किया गया। वैसे, सैकड़ों उदाहरण हैं। बस संख्याओं की पुस्तक के बारे में सोचें, जब लोग वहाँ शिकायत कर रहे हैं कि खाने के लिए कुछ नहीं है, और पूरे राष्ट्र का न्याय ज्वलंत साँपों द्वारा किया जाता है। तो, भगवान केवल व्यक्तियों का न्याय नहीं करते हैं। आदम का पाप, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कौन हैं, हम एक पतित दुनिया में रहते हैं। आदम का पाप हर चीज को प्रभावित करता है। राष्ट्रों का खुद न्याय किया जाता है। बेबीलोन का न्याय किया जाएगा, योना नीनवे जाता है और नीनवे को पश्चाताप करने के लिए कहता है, इसलिए वे पश्चाताप करते हैं और परमेश्वर उन्हें बख्श देता है। इसलिए, पूरे राष्ट्र का न्याय परमेश्वर द्वारा किया जाता है। इसलिए, आदम के पाप ने सभी को कवर किया। राष्ट्रों का खुद न्याय किया जाता है। मुझे लगता है कि कभी-कभी जब हम पाप और बीमारी के बारे में सोचते हैं, तो हम केवल व्यक्तियों के बारे में सोचते हैं। मैं जो सुझाव दे रहा हूँ वह यह है: नहीं, पूरा ब्रह्मांड प्रभावित हुआ है, और सभी राष्ट्र भी। इसके अलावा व्यक्तियों का न्याय इस आधार पर किया जाता है कि वे कैसे अनुरूप हैं या अनुरूप नहीं हैं, और वे कैसे पापी रूप से उल्लंघन करते हैं। पापी राष्ट्र नष्ट हो जाते हैं; सदोम और अमोरा, वे भस्म हो जाते हैं। समुदाय में पाप और बीमारी के बीच संबंध, केवल एक व्यक्ति नहीं है। फिर, व्यक्ति, हम हनन्याह और सफ़ीरा जैसे लोगों को देखते हैं, मरियम हैं। विशिष्ट व्यक्ति जिनका न्याय या दंड के रूप में बीमारी के साथ न्याय किया गया था, जिसे परमेश्वर ने व्यक्तिगत रूप से उन पर डाला था।

फिर, पाप का एक आखिरी पहलू, सिर्फ़ आदम का नहीं, सिर्फ़ राष्ट्रों का न्याय उनके सद्गुणों या सद्गुणों की कमी के लिए नहीं, और सिर्फ़ मरियम, हनन्याह और सफ़ीरा जैसे व्यक्तियों का नहीं

, बल्कि अब, यीशु का। यीशु, आपके पास पाप और बीमारी का संबंध है, बस अब यह प्रतिनिधि है। प्रतिनिधि से मेरा मतलब है कि यीशु पाप और बीमारी से पीड़ित है। वह दुखों का आदमी है और दुख से परिचित है। उसके कोड़ों से हम ठीक हो जाते हैं। "उसके कोड़ों से," यशायाह 53, "हम ठीक हो जाते हैं।" तो यीशु, फिर, सभी बिंदुओं पर पीड़ित है जैसे हम हैं, फिर भी पाप के बिना। इसलिए, यीशु हमारी बीमारियों को अपने ऊपर ले लेता है। वह हमारी बीमारियों को अपने ऊपर ले लेता है। यीशु बीमारों को ठीक करता है, और उसके कोड़ों से हम ठीक हो जाते हैं। तो, यीशु के पास यह पाप और बीमारी का संबंध है। वहाँ अभी भी पाप और बीमारी का संबंध है, बस प्रतिनिधि, उसने बीमारी को अपने ऊपर और हमारे पापों को प्रतिनिधि प्रतिस्थापन में ले लिया है। तो, पाप और बीमारी के बीच एक संबंध है।

टी. पाप और बीमारी के संबंध को बलपूर्वक थोपने के बारे में वास्तव में सावधान रहें

[64:15-69:35]

एफ: संयुक्त टीयू: 64:35-74:17; पाप और बीमारी का संबंध

मैं दूसरी तरफ वापस आता हूँ, क्योंकि मुझे लगता है कि यह वास्तव में महत्वपूर्ण है। मुझे लगता है कि आपको इसके साथ बहुत सावधान रहना होगा। एक बार की बात है, मेरा एक दोस्त था जिसका नाम रैंडी था। रैंडी एक बड़ा आदमी था, लगभग 6'4", थोड़ा पतला। उस समय उसकी उम्र लगभग 35 या 38 वर्ष थी। हम साथ में इज़राइल गए और वह वास्तव में एक अच्छा दोस्त था, मेरी उसके साथ बहुत अच्छी यादें हैं। जैसे-जैसे हम उसे बेहतर तरीके से जानने लगे, उसने संकेत दिया कि उसके लीवर में एक घातक बीमारी है। लीवर में क्या समस्या है? मूल रूप से, आपको केवल एक लीवर मिलता है, और आपके पास दो गुर्दे होते हैं और लोग हमेशा चीजों को आपस में बदल सकते हैं या इस तरह की चीजें कर सकते हैं, लेकिन आपके लीवर के साथ ऐसा नहीं है। आपका लीवर खराब हो जाता है, आप मर जाते हैं। तो, उसे एक लीवर की बीमारी थी, जो जाहिर तौर पर, हर 100,000,000 लोगों में से 4 को होती है। यह बीमारी इतनी दुर्लभ है कि मिनेसोटा में मेयो क्लिनिक जैसी जगह ने भी कहा, "हम जानते हैं कि यह बीमारी क्या है, हम जानते हैं कि यह जानलेवा है, हम जानते हैं कि आप मर चुके हैं, लेकिन हम नहीं जानते कि इस बीमारी का इलाज कैसे किया जाए। देश में केवल चार

लोग ही इस बीमारी से पीड़ित हैं, यह इतनी दुर्लभ है कि हम इस पर इतना अध्ययन नहीं कर रहे हैं, हम जानते हैं कि यह कब सामने आती है, यह क्या कर सकती है, लेकिन हम नहीं जानते कि इसका समाधान कैसे किया जाए।" इसलिए, रैंडी को बताया गया कि उसे यह बीमारी है। यह उसके और उसके परिवार के लिए वाकई मुश्किल था। उसकी एक छोटी बेटी थी, मुझे लगता है कि उस समय वह 16 साल की थी, मुझे ठीक से नहीं पता, लेकिन मुझे पता है कि वह एक किशोरी थी। आप कल्पना कर सकते हैं, अपने पिता को देखकर, जो इतने बड़े, मजबूत, तगड़े आदमी थे, और उन्हें बताया गया कि उन्हें यह बीमारी है और आप जानते हैं कि यह उनके अंदर खा रही है, और आप जानते हैं कि आपके पिता, जिन्हें आप प्यार करते हैं और सम्मान देते हैं, मरने वाले हैं। वह इन सभी उच्च शक्ति वाली दवाओं को ले रहा है जो उसके दिमाग को पागल कर रही हैं, इसलिए वह कभी-कभी पागलों की तरह व्यवहार करता है। मेरा मतलब है, वह वास्तव में पागल है, वह एक महान व्यक्ति है लेकिन वह वैसे भी आधे समय पागल रहता है, एक अच्छे अर्थ में, चंचलता के अर्थ में। वह बहुत रचनात्मक और मज़ेदार व्यक्ति था, बस एक परम आनंद। लेकिन फिर ये दवाएँ उसके साथ कुछ करने लगती हैं। इसलिए, जब रैंडी और मैं इज़राइल में थे, तो हम बेथेस्टा के तालाब पर गए, लायन गेट के ठीक अंदर। यदि आप 50 या 60 गज अंदर जाते हैं और दाईं ओर मुड़ते हैं, तो बेथेस्टा के तालाब हैं। क्या आपको यीशु याद है, जॉन 5 में, यह पानी के बारे में बात करता है, और एक आदमी था जो अपंग था और यीशु उस आदमी के पास आता है, और वह आदमी कहता है, "मेरे पास कोई नहीं है जो मुझे पानी में डाल सके, और जब पानी हिलता है और पानी की उपचार शक्ति आती है, तो सबसे पहले जो पानी में जाता है वह ठीक हो जाता है लेकिन मेरे पास कोई नहीं है जो मुझे पानी में डाल सके।" फिर यीशु कहते हैं, "कोई बात नहीं, तुम ठीक हो, उठो।" यीशु ने बेथेस्टा के तालाबों में इस अपंग व्यक्ति को ठीक किया। उन्होंने वास्तव में बेथेस्टा के तालाबों को यरूशलेम में, सेंट ऐनी के चर्च में पाया है। मेरा मानना है कि सेंट ऐनी मैरी की माँ थीं। तो, वैसे भी, हम सेंट ऐनी के चर्च में गए, और हमने प्रार्थना की, और मैंने उसके उपचार के लिए प्रार्थना की, कि भगवान उसे ठीक कर दें। उसके बाद वह केवल कुछ वर्षों तक जीवित रहने वाला था, और यह वास्तव में दिलचस्प था, मैं अब गॉर्डन कॉलेज में हूँ, मैं इंडियाना में ग्रेस कॉलेज में पढ़ाने के स्थान से लाखों मील दूर हूँ, और यह दिलचस्प था, 2005 में मैंने देखा, शायद

आठ या दस साल बाद जब हम एक साथ इज़राइल में थे और वह अभी भी जीवित था। मैंने उसके साथ संपर्क नहीं रखा है, मैं फेसबुक का व्यक्ति नहीं हूँ, लेकिन मुझे पता है कि 2005 में और मुझे लगता है कि 2008 में, रैंडी अभी भी जीवित था, और मैं इसके लिए भगवान की प्रशंसा करता हूँ, क्योंकि मैं इसे एक चमत्कार के रूप में देखता हूँ।

तो, मैं जिस बिंदु पर पहुंचना चाहता हूँ वह यह है कि रैंडी के कुछ दोस्त थे और वे एक चर्च जा रहे थे और कोई व्यक्ति आया और उसे पता चला कि उसे एक घातक बीमारी है, इसलिए वे रैंडी और उसकी पत्नी के पास आए और उनसे पूछा, "क्या आपके जीवन में कोई ऐसा पाप है जिसे आपने स्वीकार नहीं किया है?" तो, क्या यह बीमारी पाप का परिणाम है? अब, ध्यान दें कि हम इस पर कई बार जोर दे रहे हैं। "क्या आपके जीवन में कोई पाप है, क्या आपके जीवन में कोई ऐसा पाप है जिसे आपने स्वीकार नहीं किया है?" तो, रैंडी, भगवान आप पर यह क्यों डाल रहे हैं? मुझे याद है कि इससे उसे और उसकी पत्नी को बहुत दुख हुआ, कि कोई व्यक्ति आकर यह पूछेगा और पाप और बीमारी के बीच संबंध बनाने की कोशिश करेगा और कहेगा कि रैंडी को यह बीमारी इसलिए हुई है क्योंकि वह एक पापी है। ऐसा कहने का कोई आधार नहीं था! यह वास्तव में बदसूरत और वास्तव में गलत है, खासकर जब आप इन लोगों को नहीं जानते हैं। मैं व्यक्तिगत रूप से रैंडी को देखता हूँ, न केवल इसलिए कि वह 6'4" है, बल्कि उसके चरित्र और वह कौन था, इसकी वजह से। वह एक महान व्यक्ति हैं, मेरी इच्छा है कि मैं भी कई मायनों में उनके जैसा बन सकूँ। उनके कई गुण हैं जो मैं अपने लिए चाहता हूँ। इसलिए, मैं बस इतना ही कह रहा हूँ कि इस संबंध को बनाने में सावधानी बरतें।

यू. उपचार के दो चरम विचार - ग्लोरी बार्न और सेसेशनिस्ट [69:35-74:17]

अब आप कहते हैं, "एक मिनट रुको।" मुझे लगा कि आपने पाप और बीमारी के बीच यह संबंध स्थापित कर दिया है। मुझे लगता है कि इससे कई सवाल उठते हैं। इसलिए, मैं बीमारी के उद्देश्यों पर चर्चा करना चाहता हूँ, और मुझे लगता है कि आपको इस बारे में बहुत सरल नहीं होना चाहिए। मैं बस पीछे हटता हूँ और एक और कहानी बताता हूँ, यह फिर से उत्तरी इंडियाना से आती है। उत्तरी इंडियाना में, ग्लोरी बार्न नामक एक जगह थी, और होबार्ट फ्रीडमैन नाम का एक आदमी था, और वास्तव में, मैं इस साथी के अधीन अध्ययन करने की उम्मीद में ग्रेस कॉलेज आया था। वह

एक पुराने नियम का विद्वान था, और उसने वास्तव में मूडी प्रेस द्वारा प्रकाशित भविष्यवक्ताओं पर एक किताब लिखी थी, जो आज तक भविष्यवक्ताओं पर सबसे अच्छी किताबों में से एक है। हम तीस साल बाद की बात कर रहे हैं, होबार्ट फ्रीडमैन की यह किताब बेहतरीन है। वह अपना काम करने के लिए चला गया और ग्लोरी बार्न की शुरुआत की। यह उस समय की बात है जब करिश्माई आंदोलन जोर पकड़ रहा था, और वे चमत्कारी उपचारों में विश्वास करते थे और, मुझे यकीन नहीं है कि आत्मा में मारे जाने की बात थी या नहीं, लेकिन वे ये चमत्कारी उपचार कर रहे थे। तो, जो हुआ वह यह था कि वे डॉक्टरों पर विश्वास नहीं करते थे। जब वे डॉक्टरों पर विश्वास नहीं करते थे, तो इस तरह की चीजें सामने आईं। इसलिए, जब लोग बीमार पड़ते थे, तो वे इकट्ठा होकर प्रार्थना करते थे, और प्रार्थना करने के बाद लोग ठीक हो जाते थे। इसलिए, वे वास्तव में उपचार की बात में थे और वास्तव में डॉक्टर की बात में नहीं थे क्योंकि उन्होंने कहा था "यीशु, उसके कोड़ों से, हम ठीक हो गए हैं।"

तो, फिर क्या हुआ, वास्तव में, चर्च में, इस ग्लोरी बार्न में, चर्च में मरने वाले लोग थे, बच्चे मर गए जिन्हें बचाया जा सकता था अगर वे अस्पताल जाते, लेकिन वे नहीं गए। होबार्ट फ्रीडमैन खुद, जाहिर है, चूंकि मैंने खुद इस कहानी को नहीं देखा, मुझे बताया गया कि उनके पैर में खरोंच लग गई और वह संक्रमित हो गया। जब कुछ संक्रमित हो जाता है तो क्या होता है? खैर, आप जानते हैं, आपको संक्रमण होता है, आप कुछ एंटीबायोटिक्स लेते हैं, कोई समस्या नहीं, एंटीबायोटिक्स संक्रमण को मार देते हैं, और आपके पास इसे लेने के लिए 14 दिन होते हैं और लगभग दो या तीन दिनों के बाद, आप संक्रमण से काफी हद तक मुक्त हो जाते हैं। अगर आप एंटीबायोटिक्स नहीं लेते हैं तो क्या समस्या है? आप कहते हैं, "मैं बस भगवान से प्रार्थना करूंगा कि वह मेरे पैर को ठीक कर दे।" लेकिन अगर आप संक्रमित होने पर इसका ख्याल नहीं रखते हैं, तो क्या होता है? अचानक, आपको गैंग्रीन हो जाता है। अब, जब आपको गैंग्रीन होता है, तो क्या होता है? क्या अब हम कुछ पायदान ऊपर हैं? आपको गैंग्रीन हो जाता है, और गैंग्रीन आपके पैर तक बढ़ने लगता है और अचानक, आप अपना पैर खोने वाले हैं। अब, आप गैंग्रीन के साथ भी डॉक्टर के पास नहीं जाते हैं, क्या यह आपको मार सकता है? जवाब है, हाँ, यह आपको मार देगा। तो यहाँ इस ग्लोरी बार्न का नेता है, वह खुद मर जाता है। इसलिए, वह लगातार उपचार के लिए प्रार्थना कर रहा है और मर जाता है क्योंकि वह

डॉक्टर के पास नहीं जाता। मुझे इससे समस्या है; मुझे लगता है कि यह गलत दृष्टिकोण है।

तो, आप पाप और बीमारी कहने की कोशिश कर रहे हैं, यह एक तरह की एक-से-एक चीज़ है और मैं जो सुझाव देना चाहता हूँ वह यह है कि एक कदम पीछे हटें और धर्मशास्त्रीय स्कूलों को देखें। कुछ लोग तर्क देते हैं कि भगवान मेरी धुन पर कूद पड़ते हैं। इसलिए, इसलिए, मैं इस व्यक्ति के लिए प्रार्थना करने जा रहा हूँ और मैं माँग करने जा रहा हूँ कि भगवान इस व्यक्ति को ठीक करें और फिर भगवान उन्हें ठीक करते हैं। यह लगभग जादू जैसा है! मैं प्रार्थना करता हूँ और भगवान ठीक करते हैं, तो यह ऐसा है जैसे मेरे पास एक लीवर या वेंडिंग मशीन है। मैं लीवर खींचता हूँ और कैंडी बाहर गिरती है। तो, भगवान दिव्य वेंडिंग मशीन है। यह व्यक्ति बीमार है, मैं प्रार्थना करता हूँ, और भगवान लोगों को ठीक करते हैं। मैं वेंडिंग मशीन खींचता हूँ और वह व्यक्ति ठीक हो जाता है। क्या आप देखते हैं कि यह क्या करता है? यह लगभग जादू जैसा है, कि भगवान एक दिव्य वेंडिंग मशीन है। जीवन इतना सरल नहीं है। पाप और बीमारी हमेशा सीधे तौर पर जुड़े नहीं होते हैं और भगवान से माँग करना, आप भगवान की परीक्षा ले रहे हैं। यह ऐसा है जैसे यीशु मंदिर की चोटी से कूद पड़े और स्वर्गदूतों को उन्हें उठाना था क्योंकि शैतान ने भजन संहिता में कहा था कि स्वर्गदूत उन्हें उठाएँगे। खैर, यह शैतान का प्रलोभन था। तो, मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि आप इस तरह की चीज़ें नहीं कर सकते। एक तरफ, आपके पास ऐसे लोग हैं जो उपचार में विश्वास करते हैं और इसलिए भगवान जादू की तरह सभी को ठीक करते हैं, और हम भगवान से माँग करने जा रहे हैं कि वह ठीक करें, लेकिन हम ऐसा नहीं कर सकते। दूसरी तरफ, आपके पास वे लोग हैं जिन्हें सेसेशनिस्ट कहा जाता है। सेसेशनिस्ट कौन हैं ? वे कहते हैं कि भगवान ने ये सभी चमत्कार तब किए थे जब प्रेरितों के काम की पुस्तक शुरू हो रही थी। अब, भगवान उस तरह से कार्य नहीं करते या ऐसा नहीं करते। भगवान के चमत्कारों का अंत हो गया था। इसलिए उन्हें सेसेशनिस्ट कहा जाता है। भगवान ने ये चमत्कार करना "बंद" कर दिया है।

V. चमत्कार और मुक्ति इतिहास का आंदोलन [74:17-78:07]

जी: संयुक्त वी-एबी; 74:17-94:18; बीमारी के उद्देश्य

मुझे स्वीकार करना होगा, मुझे डॉ. रॉबर्ट वैनॉय द्वारा वर्षों पहले सिखाई गई बात पसंद है, जब

मैं सेमिनरी में था, कि मूल रूप से, शास्त्र के चमत्कारों का पता लगाना दिलचस्प है। तो, शास्त्र के चमत्कार कब हुए? जब भी रहस्योद्घाटन की पुस्तक आगे बढ़ रही है, भगवान की महान मुक्ति प्रक्रिया आगे बढ़ रही है। इसलिए, भगवान एक बड़े पैमाने पर मुक्ति का कदम उठाने जा रहे हैं। इसलिए, उदाहरण के लिए, जब वे मिस्र में हैं, तो भगवान उन्हें रेगिस्तान में ले जाने जा रहे हैं। वह गुलामों को मुक्त करेगा और उन्हें वादा किए गए देश में ले जाएगा। इसलिए, उन्हें मिस्र में 400 वर्षों से गुलामी से बाहर निकालने और उन्हें बाहर लाने के लिए, आपके पास ये सभी चमत्कार हैं। आपके पास दस विपत्तियाँ हैं जहाँ मूसा पानी को खून में बदल देता है, जहाँ टिट्टियाँ आती हैं, जहाँ सूरज को काला कर दिया जाता है, और जहाँ फिरौन और उसके लोगों के ज्येष्ठ पुत्रों को मार दिया जाता है जबकि फसह के दौरान इस्राएल के ज्येष्ठ पुत्रों को बख्श दिया जाता है। तो, आपके पास जो है, वह यह है कि मूसा उन्हें बाहर निकालने जा रहा है। इस मुक्ति प्रक्रिया में एक बड़ा कदम आगे बढ़ा है, और इसलिए मूसा के साथ ये सभी चमत्कार हुए हैं। फिर, क्या होता है? आप एलीशा और एलिजा के समय में आते हैं और इस्राएल में बहुत बुराई है। परमेश्वर इस्राएल के साथ काम कर रहा है और उन्हें वापस लाने की कोशिश कर रहा है, और इसलिए इन लोगों, एलिजा और एलीशा, इन भविष्यवक्ताओं के साथ महान चमत्कार हुए हैं। फिर यीशु के समय में क्या होता है? यीशु मुक्ति योजना में एक और बड़ा कदम आगे बढ़ाते हैं, और यीशु के साथ क्या होता है? यीशु आते हैं और यीशु क्या करते हैं? यीशु पानी पर चलते हैं और रोटियों और मछलियों की कई रोटियाँ बनाते हैं, वे लोगों को चंगा करते हैं, और एक लड़की को मृतकों में से जीवित करते हैं, लाजर को मृतकों में से जीवित करते हैं, और वे स्वयं मृतकों में से जीवित होते हैं।

चर्च के संदर्भ में आगे की ओर एक बड़ा कदम और बंधनों को तोड़ना तथा अब्राहमिक वाचा को पूरा करना, परमेश्वर अब्राहम से कहता है, तुम्हें भूमि, बीज और आशीर्वाद मिलता है, और अब तुम सभी राष्ट्रों के लिए एक आशीर्वाद बनोगे। नए नियम में अचानक, आप अब्राहम के वंशजों को सभी राष्ट्रों के लिए एक आशीर्वाद बनते हुए देखते हैं और दाऊद के पुत्र यीशु मसीह, और वह इस तरह से बाहर जा रहे हैं। तो, अचानक, आपको प्रेरितों के काम की पुस्तक में ये चमत्कार मिलते हैं, और इसलिए आपको एक लंगड़ा आदमी ठीक होता हुआ मिलता है और प्रेरितों के काम की पुस्तक

में पीटर और पॉल ये चमत्कार करते हुए मिलते हैं। मोचन आगे बढ़ रहा है। इसलिए, जैसा कि मोचन इतिहास एक बड़ा कदम आगे बढ़ाता है, ये सभी चमत्कार हैं जो उपस्थित हो रहे हैं।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के बारे में क्या? अंत के समय में, आप मत्ती 24-25 के जैतून के प्रवचन और मार्क 13 से देखते हैं, अंत के समय में क्या होगा, सूर्य और चंद्रमा का अंधकारमय होना और ये सभी चमत्कार होने वाले हैं, के बारे में ये महान कथन। वास्तव में, वे चेतावनी दे रहे हैं कि शैतान के माध्यम से कुछ चमत्कार होने जा रहे हैं, कि यह कहता है कि चुने हुए लोग भी इन चमत्कारों से धोखा खा सकते हैं जो होने जा रहे हैं। इसलिए, जैसे-जैसे हम अंत के समय के करीब आते हैं, आप उम्मीद करते हैं कि ये सभी चमत्कार फिर से सामने आएंगे क्योंकि परमेश्वर की मुक्ति योजना आगे बढ़ रही है।

इसलिए, मैं यह सोचने में कोई रूढ़िवादी नहीं हूँ कि आज ईश्वर चंगा नहीं कर सकता, मुझे लगता है कि यह थोड़ा अतिवादी है, लेकिन मैं यह ज़रूर कहता हूँ कि आपको चंगा करने पर बहुत ज़्यादा ज़ोर देने या चंगा करने पर कम ज़ोर देने से सावधान रहना चाहिए। यह यीशु से है: "जो स्वस्थ हैं उन्हें डॉक्टर की ज़रूरत नहीं है, लेकिन जो बीमार हैं उन्हें डॉक्टर की ज़रूरत है।" इसलिए, आपको यह कहने में सावधान रहना चाहिए कि हमें डॉक्टरों की ज़रूरत नहीं है क्योंकि यीशु बस सबको चंगा कर देंगे क्योंकि यह सच नहीं है। यह इसके बारे में सोचने का एक बहुत ही अभिमानी तरीका है, और आपको सावधान रहना चाहिए। एक तरफ़, ईश्वर चंगा करता है, और दूसरी तरफ़, आप यह नहीं कह सकते कि ईश्वर आपकी धुन पर चलता है।

बीमारी के उद्देश्य—दण्ड और पश्चाताप [78:07-81:07]

अब, मैं अलग-अलग कारणों पर जाना चाहता हूँ, जो मुझे लगता है कि महत्वपूर्ण है - ठीक है, मुझे यहाँ वापस आकर "मनुष्य का पुत्र" शब्द के बारे में थोड़ी बात करनी चाहिए। मुझे लगता है कि यह बहुत दिलचस्प है कि यह शब्द "मनुष्य का पुत्र" और इसका संदर्भ अपंग व्यक्ति के साथ मार्ग में उपयोग किया जाता है जिसे यीशु ठीक करेंगे और "मनुष्य के पुत्र" के पास पृथ्वी पर पापों को क्षमा करने की शक्ति है। मुझे लगता है कि यहाँ जो हो रहा है वह यह है कि विदरिंगटन ने नोट किया है, यह यीशु के संदर्भ में लिखे गए प्रारंभिक चर्च का प्रतिबिंब नहीं है, यीशु के मूल कथन का। आरटी फ्रांस ने

नोट किया कि मसीहा के बजाय "मनुष्य के पुत्र" का संदर्भ - यीशु ने मसीहा के बजाय "मनुष्य का पुत्र" क्यों कहा? वह इन लोगों को ठीक करने जा रहा है, और यह संभव हो सकता है कि वह राष्ट्रवादी मसीहा चीज़ नहीं चाहता है, फिर वह इन सभी राजनीतिक चीज़ों को अपने ऊपर ले लेगा, और उसे डेविड का पुत्र माना जाता है। फिर उसे वे सभी चीज़ें करनी होंगी जिनकी यहूदी उम्मीद कर रहे थे, रोम के खिलाफ जाना और रोमन जुए को उतार फेंकना। इसलिए, यीशु ने "मनुष्य का पुत्र" शब्द का प्रयोग चंगाई के संदर्भ में किया।

लेकिन, अब हम बीमारी के उद्देश्यों पर आते हैं, और मैं बस अपनी सोच को थोड़ा और व्यापक बनाना चाहता हूँ। क्या परमेश्वर कभी बीमारी को दंड के रूप में इस्तेमाल करता है? इसका उत्तर है हाँ, हनन्याह और सफीरा, प्रेरितों के काम 5, उन्होंने पवित्र आत्मा से झूठ बोला, वे मारे गए। हेरोदेस, उसका अहंकार, "मैं एक भगवान हूँ" जैसी बात, वह मारे गए। तो, हाँ, पाप के परिणामस्वरूप बीमारी और दंड के बीच एक संबंध है। क्या यह संभव है कि पाप इतना दंड देने के लिए नहीं बल्कि किसी व्यक्ति को पश्चाताप की ओर ले जाने के लिए हो? तो, बस इसके एक उदाहरण के बारे में सोचें, कि एक व्यक्ति, बीमारी के कारण, पश्चाताप की ओर धकेला गया। संख्या 12 में मरियम इसका एक उदाहरण होगा। मरियम को कोढ़ हो जाता है। मुद्दा यह है कि परमेश्वर उसे सिखाने की कोशिश कर रहा है कि उसे अपने आदमी मूसा, अपने सेवक का सम्मान करने की ज़रूरत है। तो, मैं कई तरीकों से यह कहने की कोशिश करूँगा कि पाप और बीमारी के बीच कई कारण और कई संबंध हैं। आपको बहुत सावधान रहना होगा, भगवान कुछ और कर रहे होंगे, बीमारी एक सज़ा हो सकती है, लेकिन यह इतनी सज़ा नहीं हो सकती है बल्कि पश्चाताप की ओर ले जाने वाली हो सकती है, किसी व्यक्ति को पश्चाताप के लिए प्रेरित करने वाली हो सकती है। तो, सज़ा और पश्चाताप। बीमारी के कारण दो चीज़ें हो सकती हैं, सज़ा, हाँ, और पश्चाताप का साधन, हाँ। लेकिन फिर यहाँ कुछ और भी हैं जो बहुत अधिक सकारात्मक हो सकते हैं।

Y. बीमारी के उद्देश्य—अय्यूब [81:07-84:06]

अय्यूब के बारे में क्या? मान लीजिए कि आप अय्यूब में हैं और अय्यूब आपका अच्छा दोस्त है, और आप अय्यूब की पुस्तक, अध्याय 1, 2, और 3 में आते हैं और अय्यूब को चुना जाता है और शैतान

परमेश्वर के पास आता है और कहता है कि अगर वह अय्यूब के पास जो कुछ भी है उसे ले लेता है, तो वह परमेश्वर को उसके मुँह पर कोसेगा। तो, परमेश्वर कहता है, "अय्यूब मेरा आदमी है, पृथ्वी पर किसी भी व्यक्ति से, अय्यूब सबसे अच्छा है।" शैतान कहता है, "हाँ, वह सबसे अच्छा है क्योंकि आप उसे ये सभी अच्छी चीजें देते हैं। यदि आप अच्छी चीजें छीन लेते हैं और वे चीजें छीन लेते हैं जो आपने उसे आशीर्वाद के रूप में दी हैं, तो अय्यूब आपको कोसेगा।" तो, शैतान उसकी सारी अच्छी चीजें छीन लेता है, अय्यूब अपनी संपत्ति खो देता है, वह अपने परिवार और अपने बच्चों को खो देता है, जो मारे जाते हैं। फिर शैतान परमेश्वर के सामने वापस आता है और अय्यूब ने अभी भी परमेश्वर को शाप नहीं दिया है, और शैतान कहता है, "हाँ, लेकिन अगर तुम उसके शरीर पर वार करते हो, भले ही वह अपनी सारी संपत्ति जाने को तैयार हो, वह अपने बच्चों को जाने देने को तैयार हो, लेकिन तुमने उस व्यक्ति को खुद नहीं मारा है। अगर तुम उसे बीमारी के ज़रिए व्यक्तिगत रूप से मारते हो, तो वह तुम्हारे मुँह पर तुम्हें शाप देगा।" तो, परमेश्वर कहता है, "ठीक है, जाओ और उसके शरीर पर वार करो, लेकिन उसे मत मारो। उसे मत मारो, यही सीमा है, लेकिन तुम उसके शरीर पर वार कर सकते हो।" तो, फिर तुम्हारे पास अय्यूब है, मुझे लगता है कि यह अध्याय 3 है, वह दर्द के कारण राख में बैठकर खुद को खुजला रहा है। अब उसके शरीर पर वार किया गया है और तुम पूछते हो, "क्या अय्यूब बीमार हो गया था?" क्या उसके शरीर पर ये बीमारियाँ इसलिए आईं, क्योंकि वह बहुत पापी था? नहीं, अय्यूब को ये बीमारियाँ इसलिए आईं, क्योंकि वह बहुत अच्छा था। परमेश्वर हमें बताता है कि अय्यूब दुनिया में सबसे अच्छा है, इसलिए तुम्हें सावधान रहना होगा। क्या अय्यूब की बीमारी यह दिखाने के लिए अय्यूब की परीक्षा है कि अय्यूब सोना है? तो, बीमारियों ने वास्तव में उसके चरित्र को दिखाया और प्रकट किया, और इसने उसके प्रकाश को चमकने दिया। जब मैं रैंडी जैसे किसी व्यक्ति को देखता हूँ, तो मैं भी यही बात कहता हूँ। उसे यह बीमारी है कि वह मरने वाला है और वह जानता है कि वह जल्द ही मरने वाला है, और वह अपने बच्चों और अपनी पत्नी के बारे में चिंतित है, जिसे वह प्यार करता है। तो, रैंडी इन चीजों के बारे में चिंतित है, लेकिन क्या होता है? बीमारी उसके चरित्र को बाहर आने देती है। तो, जब आप इस व्यक्ति को देखते हैं जिसे यह घातक बीमारी है, जो मृत्यु का सामना कर रहा है, जब कोई व्यक्ति मृत्यु का सामना करता है, तो उसका चरित्र बाहर आ

जाता है। तो, आप देख सकते हैं, उस बिंदु पर कोई चीज़ नहीं छिपती, उसका चरित्र बाहर आ जाता है। तो, रैंडी के साथ, आप उसे चमकते हुए देखते हैं, क्योंकि उसे यह बीमारी है और वह जानता है कि वह मरने वाला है। यह अविश्वसनीय है। अय्यूब बीमार है लेकिन यह अय्यूब की बुद्धि है, उसका चरित्र और गुण बाहर आते हैं। तो, मैं बस इतना कहना चाहता हूँ कि अय्यूब बीमार है, सजा के तौर पर नहीं, पश्चाताप के साधन के तौर पर नहीं, बल्कि अपना चरित्र दिखाने के लिए। यह उनके चरित्र को उजागर करता है तथा उनके चरित्र को और अधिक निखारने का अवसर देता है।

बीमारी के उद्देश्य— विनम्रता और परमेश्वर की महिमा [84:06-86:52]

दूसरा पहलू है विनम्रता--मैंने आज्ञाकारिता को छोड़ दिया। लेकिन ठीक है, पॉल को शरीर में एक कांटा दिया गया था, और यह 2 कुरिन्थियों से है। पॉल अपने "शरीर में कांटे" के बारे में बात करता है। तो, पॉल के शरीर में यह कांटा क्यों है? बहुत से लोग इसे समझने की कोशिश करते हैं, जिनमें मैं भी शामिल हूँ, और कुछ लोग सोचते हैं कि यह उसकी आँखों या कुछ और की वजह से था, और फिर, जब आपको मौत के कगार पर पथर मार दिया जाता है, तो आप टूट जाते हैं, और जब आप टूट जाते हैं, तो उसके बाद आप कभी भी पूरी तरह से ठीक नहीं हो पाते। तो, पॉल के शरीर में यह कांटा है, और वह कहता है कि उसे शरीर में कांटा इसलिए दिया गया था ताकि वह विनम्र बना रहे। तो, कभी-कभी, भगवान किसी को बीमारी देते हैं ताकि उनके चरित्र का एक खास पहलू विकसित हो सके। क्या आप ऐसे लोगों को जानते हैं जो बीमारियों से पीड़ित हैं? मैं यहाँ गॉर्डन कॉलेज में कुछ दोस्तों के बारे में सोच सकता हूँ कि उनकी पत्नी को हर तरह की बीमारियाँ हैं और जो हुआ है, वह यह है कि यह हमारे चरित्र के कुछ पहलुओं को सामने आने देता है, विनम्रता और करुणा, भगवान की महिमा।

क्या यह संभव है कि बीमारी न्याय के रूप में नहीं, सजा के रूप में नहीं, पश्चाताप के लिए नहीं, बल्कि परमेश्वर की महिमा की घोषणा करने के लिए हो? यह वास्तव में यूहन्ना से आता है, और इधर-उधर उछलने के लिए क्षमा करें, लेकिन यूहन्ना 9, यह व्यक्ति जन्म से अंधा है। तो, सवाल यह है कि यह किसका पाप है, उसका या उसके माता-पिता का? तो, अगर वह अंधा पैदा हुआ है, तो वह कैसे पाप कर सकता है? दूसरे शब्दों में, पाप और बीमारी के बीच क्या संबंध है? तो, वे पाप और

बीमारी के बीच एक-से-एक संबंध बनाना चाहते हैं। तो, किसने पाप किया, इस आदमी ने या उसके माता-पिता ने? यीशु कहते हैं कि न तो इस आदमी ने और न ही उसके माता-पिता ने पाप किया। तो, दूसरे शब्दों में, इस आदमी के अंधेपन का किसी विशेष पाप से कोई लेना-देना नहीं है। तो, यीशु कह रहे हैं कि न तो उन्होंने और न ही उनके माता-पिता ने पाप किया। अब, यीशु यह नहीं कह रहे हैं कि वे पापहीन हैं, लेकिन वे कह रहे हैं कि उनके अंधेपन का पाप से कोई लेना-देना नहीं है, चाहे वे उनके माता-पिता हों या उनके। अब, यीशु ने उसकी आँखों पर मिट्टी की टिकियाँ लगाईं, वह व्यक्ति धोने के लिए नीचे गया। अब वह देख सकता है। यीशु ने उसे दृष्टि प्रदान की। यीशु ने कहा कि यह व्यक्ति परमेश्वर की महिमा की घोषणा करने, परमेश्वर की महिमा दिखाने के लिए अंधा पैदा हुआ था। यीशु उसे चंगा करने जा रहा है और अपनी महिमा, परमेश्वर की महिमा की घोषणा करेगा। तो, बीमारी परमेश्वर की महिमा के परिणामस्वरूप आती है। इसलिए, मैं जो कह रहा हूँ, वह यह है कि बीमारी से बहुत सकारात्मक चीजें निकल सकती हैं।

ए.ए. बीमारी के उद्देश्य—करुणा और ज्ञान [86:52-91:16]

बीमारी से जो चीजें निकलती हैं, उनमें से एक, और इब्रानियों 4:15 का संदर्भ देते हुए, "इसलिए, जब हमारा ऐसा महान महायाजक है, जो स्वर्ग से होकर गया है, अर्थात् परमेश्वर का पुत्र यीशु, तो आइए हम अपने विश्वास को दृढ़ता से थामे रहें। क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमदर्दी न रख सके। परन्तु हमारा ऐसा महायाजक है, जो सब बातों में हमारे समान परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला।" इब्रानियों 4:15, मुद्दा यह है कि यीशु हमारी कमजोरियों में हमदर्दी रख सकता है, क्योंकि वह स्वयं कमजोर हो गया है, "उसके कोड़ों से हम चंगे हुए हैं।" उसने संघर्ष को जाना है, उसने मृत्यु को जाना है। उसने मृत्यु पर विजय पाई है, और इसलिए वह हमें समझ सकता है, क्योंकि उसने कष्ट सहे हैं। यही वह मुद्दा है, जिसे मैं कहना चाहता हूँ, एक व्यक्ति जिसने दुख को जाना है, वह दूसरे व्यक्ति पर दया कर सकता है। एक व्यक्ति जिसने दुख को गहराई से जाना है, वह करुणा के कारण दूसरे व्यक्ति को गहराई से छू सकता है। वे दूसरे व्यक्ति के प्रति करुणा महसूस करते हैं। करुणा मनुष्यों के बीच एक बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू है। एक व्यक्ति करुणा की भावना कैसे विकसित करता है? क्योंकि उन्होंने खुद बीमारी का अनुभव किया है, एक कैंसर

रोगी, या एक व्यक्ति जो दिल के दौरे या दिल के ऑपरेशन से गुजरा है, वह व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के लिए गहरी करुणा रख सकता है। इसके उदाहरण वे लोग हैं जो होलोकॉस्ट से पीड़ित हैं। हमारे पास एक व्यक्ति था, सोन्या वीटज़, वह एक ऐसी व्यक्ति थी जो गॉर्डन कॉलेज में आती थी, और अपने होलोकॉस्ट अनुभव का वर्णन करती थी। वह होलोकॉस्ट की उत्तरजीवी है, और वह उस भयावहता का वर्णन करती थी। यह महिला अन्य लोगों के प्रति बहुत दयालु थी क्योंकि वह पीड़ा को समझती थी। इसलिए, जो लोग पीड़ित हुए हैं, उनमें अक्सर दूसरों पर दया करने की यह जबरदस्त क्षमता होगी। इसलिए, यह संभव है कि ईश्वर किसी व्यक्ति की करुणा, इस दयालु तरीके से अन्य लोगों से प्यार करने में मदद करने के लिए पीड़ा का उपयोग करता है। मैं बस इतना कहना चाह रहा हूँ, सवाल पर वापस जाने के लिए: क्या पाप बीमारी से जुड़ा है? नहीं! कभी-कभी, यह ईश्वर की महिमा हो सकती है, कभी-कभी यह विनम्रता या किसी अन्य पहलू की विशेषता हो सकती है, शरीर में एक कांटा जो उन्हें विनम्र रखता है, पाप और बीमारी के अन्य पहलू यह हो सकते हैं कि वे करुणा करेंगे, कि यह व्यक्ति अपने जीवन में इस बिंदु पर बीमार हो जाता है क्योंकि ईश्वर जानता है कि अपने जीवन में बीस साल बाद, वे एक ऐसे व्यक्ति से मिलेंगे जो एक भयानक बीमारी से ग्रस्त होगा और वे उस व्यक्ति की एक अद्भुत तरीके से सेवा करने में सक्षम होंगे। तो, करुणा है और हाँ, निर्णय का एक तत्व हो सकता है, या इस व्यक्ति को पश्चाताप की ओर धकेलना हो सकता है, लेकिन मैं बस इतना कह रहा हूँ, आप नहीं जानते। हम नहीं जानते। जब कोई व्यक्ति बीमार होता है, तो उन्हें फ्लू हो जाता है, उन्हें निमोनिया हो जाता है, उन्हें यह क्यों हुआ? आप बस यह नहीं जानते। हम ईश्वर नहीं हैं, हम नहीं जानते। इसलिए, मैं बस इतना कह रहा हूँ कि जब आप इस तरह की स्थिति में आते हैं, तो ईश्वर उपयोग करता है, और यह बाइबल के मेरे सबसे अधिक नफरत वाले छंदों में से एक है [विडंबना]। सभोपदेशक 1:18। वैसे भी बहुत से लोगों को सभोपदेशक की पुस्तक पसंद नहीं है, मुझे लगता है कि यह बाइबल की सबसे अच्छी पुस्तकों में से एक है, लेकिन वैसे भी, यह मूल रूप से कहता है, "दुख के माध्यम से ज्ञान आता है," और हम यह जानते हैं, यह प्राचीन दुनिया में कई लोगों द्वारा कहा गया है, कि दुख ज्ञान लाता है। इसलिए, इसलिए, मैं दुख को इस तरह से खारिज नहीं करना चाहता जैसे कि दुख केवल पाप से जुड़ा हुआ है। नहीं, कभी-कभी दुख का बीमारी के माध्यम से पाप पर न्याय के अलावा अन्य सभी प्रकार के

उद्देश्य हो सकते हैं। तो, चलो फिर से वापस चलते हैं और बस उन कारणों की बहुलता से अवगत होते हैं जिनके कारण ईश्वर किसी व्यक्ति के जीवन में बीमारी का उपयोग कर सकता है और इसका उपयोग जीवन के बारे में अधिक गहराई से सोचने के लिए करता है। मुझे मसीह के बारे में अधिक गहराई से सोचने की ज़रूरत है, मुझे अपने चरित्र के बारे में अधिक गहराई से सोचने की ज़रूरत है जब बीमारी आती है और आप उन प्रकार की चीजों का सामना करते हैं। इसलिए, बीमारी व्यक्ति के मूल को उजागर करती है।

ए.बी. आज उपचार - डॉक्टर, दवा और बीमारी का उद्देश्य [91:16-94:18]

हमने कहा कि यीशु ने डॉक्टर की आवश्यकता को स्वीकार किया। मार्क 2:17, "जो स्वस्थ हैं उन्हें डॉक्टर की आवश्यकता नहीं है, लेकिन जो बीमार हैं उन्हें डॉक्टर की आवश्यकता है," यीशु ने स्पष्ट रूप से कहा। पॉल ने दवा की आवश्यकता को स्वीकार किया। यह एक बात सामने आती है, मुझे लगता है कि यह काफी दिलचस्प है। टिमोथी पॉल के बेटे की तरह है, एक आध्यात्मिक बेटे की तरह, शारीरिक रूप से नहीं। टिमोथी को पॉल द्वारा एक तरह से सलाह दी जाती है। इसलिए, पॉल टिमोथी को पानी पीना बंद करने के लिए कहता है। अगर वह पानी पीता है, तो वह बीमार हो जाएगा। प्राचीन दुनिया में, और मुझे पता है कि आप में से कुछ लोग मध्य पूर्व की यात्रा कर चुके हैं, इसलिए आपको पता होगा, बहुत सी जगहों पर आप पानी नहीं पीते क्योंकि आप वास्तव में बीमार हो सकते हैं। तो, क्या होता है, पॉल उसे पानी पीना बंद करने और उसके बजाय अपने पेट के लिए शराब पीने के लिए कहता है। तो, दूसरे शब्दों में, शराब बैक्टीरिया को मारती है और शराब से आपको बीमार होने की संभावना कम होती है। तो, कुछ चिकित्सा संबंधी चीजें हैं, जैसे अपने हाथ धोना। यहूदियों के साथ पुराने नियम की तरह, आपको साफ-सफाई के लिए हर समय धोना पड़ता है। कीटाणुओं से छुटकारा पाने के लिए यह एक समझदारी भरा काम है। इसलिए, आपको समझदारी से काम लेना होगा, और पॉल दवा की ज़रूरत को स्वीकार करता है, इस मामले में यह तीमुथियुस के पेट के लिए शराब थी। सभी बीमारियाँ पाप से नहीं होती हैं, और हमने कहा कि यीशु ने स्पष्ट रूप से कहा कि जो आदमी अंधा पैदा हुआ, यह उसकी या उसके माता-पिता की गलती नहीं थी। वह आदमी परमेश्वर की महिमा के लिए अंधा पैदा हुआ था।

एक और बढ़िया अंश जो मुझे पसंद है और मैं एक और संदर्भ विकसित करता हूँ वह है लूका 13:4 और उसके बाद। एक मीनार गिरती है और मुझे लगता है कि लगभग 13 लोग मारे जाते हैं। और फिर यीशु कहते हैं, "क्या वे लोग किसी और से ज़्यादा पापी थे? मीनार उन पर गिर गई और उन्हें मार डाला। क्या वे किसी और से ज़्यादा पापी थे?" यीशु कहते हैं, "नहीं, इसका उनके पाप से कोई लेना-देना नहीं था कि वह गिर गई।" तो, हम नहीं जानते कि भगवान कुछ चीज़ें क्यों करते हैं। जब आप यह कहना शुरू करते हैं कि भगवान ने इस कारण से ऐसा किया, तो क्या आपको लगता है कि आप उनके कारणों को जानने के लिए भगवान हैं? मैं अपनी पत्नी के मन को भी नहीं पढ़ सकता कि वह क्या सोच रही है, हम भगवान के मन को कैसे पढ़ सकते हैं और बता सकते हैं कि वह क्या सोच रहा है जब आपके पास एक अनंत, सर्वज्ञ भगवान है जो सब कुछ जानता है। क्या आप बता सकते हैं कि भगवान ने कुछ क्यों किया? जब तक वह मुझे यह नहीं बताता कि उसने कुछ क्यों किया, मैं केवल अनुमान लगा रहा हूँ। कभी-कभी, मैं यह अनुमान भी नहीं लगा सकता कि मेरी पत्नी कुछ चीज़ें क्यों करती है, इसलिए आपको इस बारे में बहुत सावधान रहना होगा। यीशु ने कहा कि वे लोग ज़्यादा पापी नहीं थे। वह हमें स्पष्ट रूप से बताता है कि वे ज़्यादा पापी नहीं थे। मीनार उन पर गिर गई, हालाँकि वे ज़्यादा पापी नहीं थे। इसलिए, आप यह संबंध नहीं बना सकते।

2 कुरिन्थियों 12:7 में पौलुस खुद बीमार था, "शरीर में एक कांटा।" पौलुस अपने शरीर में कांटे के बारे में बात करता है जो परमेश्वर ने उसे जाहिर तौर पर उसे विनम्र बनाए रखने के लिए दिया था। लेकिन शरीर में यह कांटा एक अच्छी बात नहीं थी। सभोपदेशक ने कहा कि बीमारी ज्ञान प्राप्त करने का एक साधन है। और साथ ही किसी के चरित्र का चमकना, हमने पहले अय्यूब के साथ इसका उल्लेख किया था।

ए.सी. यीशु की चंगाई—पापों को क्षमा करना चंगाई से ज़्यादा आसान है [94:18-98:58]

एच: एसी-एजी का संयोजन; 94:18-111:45; उपचार और राज्य

अब, हम यीशु को लोगों को ठीक करते हुए देखते हैं। मैं इस उपचार और यीशु को राज्य से जोड़ता हूँ। यीशु के बारे में एक खूबसूरत बात यह है कि, मुझे लगता है, यीशु के साथ आपको धरती पर परमेश्वर के राज्य का प्रवेश मिलता है। तो, यीशु एक ऐसे व्यक्ति के पास जाता है जो चल नहीं

सकता, वह अपंग है। यीशु कहते हैं, "तुम्हारे पाप क्षमा हुए हैं।" मुझे इस पर वापस आना है क्योंकि मैंने कुछ बातें छोड़ दी थीं। यीशु ने ऐसा क्यों कहा? क्या मेरे लिए "तुम्हारे पाप क्षमा हुए हैं" या "उठो और चलो" कहना आसान है? यीशु कहते हैं, अगर मैं तुमसे कहता हूँ उठो और चलो और तुम चलते हो, तो तुम जानते हो कि पाप क्षमा हुए हैं। जाहिर है, इस मामले में, पाप और बीमारी के बीच किसी तरह का संबंध था। इसलिए, यीशु उस व्यक्ति से कहता है कि उठो और चलो। शायद यीशु बस उस व्यक्ति की अपनी धारणा को राहत दे रहा है, शायद इस व्यक्ति ने सोचा कि उसने कोई पाप किया है और इसलिए वह अपंग है और यीशु को उस व्यक्ति से यह कहने की ज़रूरत है, कि उसके पाप क्षमा हुए हैं। तब वह व्यक्ति खुद क्षमा को जान जाएगा। लेकिन फिर यीशु - क्या यह कहना आसान है कि तुम्हारे पाप क्षमा हो गए हैं या उठो और चलो? खैर, यह कुछ इस तरह है: मेरा एक दोस्त था, माइक, जब मैं इंडियाना में एक अधिकतम सुरक्षा जेल में पढ़ाता था, और माइक एक बड़ा आदमी था, लगभग 6'5", लगभग 250 पाउंड , और उसने जेल में रिकॉर्ड बनाया था, जहाँ ये लोग दिन में आठ घंटे वजन उठाते थे, उसने जेल में बेंच-प्रेस के लिए रिकॉर्ड बनाया था, मुझे लगता है कि यह 440 या 480 पाउंड था , मैं भूल गया कि यह क्या था। लेकिन माइक एक बड़ा आदमी था, जो 480 पाउंड बेंच-प्रेस करता था। तो, पाप और बीमारी, क्या वे जुड़े हुए हैं? इसलिए, मैं कहना चाहता हूँ, नहीं। यदि माइक 480 पाउंड बेंच-प्रेस कर सकता है , तो वह 150 पाउंड उठाने पर कैसी प्रतिक्रिया करेगा ? यदि वह इतनी बड़ी मात्रा में प्रेस कर सकता है, तो क्या छोटी मात्रा कुछ भी नहीं है? यदि वह 480 पाउंड उठा सकता है , तो वह 100 पाउंड उठा सकता है , संभवतः एक हाथ से। इसलिए, मैं जो कह रहा हूँ, यदि आप बड़ा कर सकते हैं, तो निश्चित रूप से आप छोटा भी कर सकते हैं। इसे तर्क *ए फोर्टियोरी कहते हैं*। यदि आप मजबूत कर सकते हैं, तो निश्चित रूप से आप छोटा भी कर सकते हैं। अब, तर्क पर वापस आते हुए, यीशु ने कहा, यदि मैं उससे कहूँ कि उठो और चलो, तो वह जान जाएगा कि उसके पाप क्षमा कर दिए गए हैं। कौन सा करना कठिन है? कहो उठो और चलो या पापों को क्षमा करो? यीशु ने कहा उठो और चलो करना कठिन है, यदि आप यह जानते हैं, तो आप जानते हैं कि आपके पाप क्षमा हो गए हैं। अब, शायद बाहरी, आंतरिक चीज़ों की तरह, आप इस आदमी को उठते और चलते हुए देख सकते हैं, आप उसके पापों की क्षमा नहीं देख सकते। लेकिन यह कह सकता है कि यह कठिन है

- यदि मैं इसे इस तरह से जोड़ सकता हूँ - वह कह सकता है कि पापों के परिणामों से निपटना कभी-कभी पाप की क्षमा से भी कठिन होता है। मैं फिर से कहना चाहता हूँ कि पापों के परिणामों से निपटना कभी-कभी पाप की क्षमा से भी ज़्यादा कठिन होता है। दूसरे शब्दों में, हो सकता है कि किसी व्यक्ति को उसके पापों की क्षमा मिल जाए, लेकिन परिणाम फिर भी भुगतने पड़ते हैं।

तो, उदाहरण के लिए, मान लीजिए, क्योंकि बोस्टन में ऐसा हुआ है, दादी अपनी कार में हैं, उनकी उम्र 85 साल है, और उन्हें अपनी कार चलाने में परेशानी हो रही है। दीवार के सामने एक बच्चा खड़ा है। दादी दीवार के पास आती हैं और कार को रोकने के लिए ब्रेक पर अपना पैर रखती हैं, ताकि वह बच्चे को दीवार से न टकराए। लेकिन ब्रेक पर पैर रखने के बजाय, वह गैस पेडल दबा देती हैं, क्योंकि उनका पैर कुछ हद तक अकड़ गया है। इसलिए, वह ब्रेक के बजाय गैस पेडल दबाती हैं और वह बच्चे को कुचल देती हैं और दीवार से टकराकर मर जाती हैं। अब, सवाल: क्या आप दादी को इस बच्चे को मारने के लिए माफ़ कर सकते हैं? क्या उन्होंने जानबूझकर ऐसा किया? क्या कोई दुर्भावना थी या कोई पूर्व विचार? नहीं, वह 85 साल की हैं, उन्हें शायद कार नहीं चलानी चाहिए। तो हाँ, वहाँ कुछ मुद्दे हैं। लेकिन दादी को माफ़ करना संभव है। सवाल: क्या आप परिणामों को उलट सकते हैं? बच्चा मर चुका है, क्या आप उन परिणामों को उलट सकते हैं? नहीं, आप नहीं कर सकते। पाप के परिणामों से निपटना अक्सर पाप से ज़्यादा कठिन होता है। उसे माफ़ किया जा सकता है, लेकिन बच्चा अभी भी मर चुका है। इसलिए, मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि एक व्यक्ति कुछ पापपूर्ण व्यवहार कर सकता है और माफ़ी पा सकता है, लेकिन अक्सर ऐसा होता है कि उसने जो किया उसके परिणामों को उलटा नहीं किया जा सकता। परिणाम बने रहते हैं।

ई.पू. चंगाई और राज्य—पहले से ही है, लेकिन अभी नहीं [98:58-101:47]

अब, यीशु कहते हैं, मैं परिणामों को संभाल सकता हूँ, साथ ही पापों की क्षमा भी। यीशु कहते हैं, मैं परिणामों को पलट सकता हूँ। उठो और चलो। तो, यीशु कहते हैं, मैं बड़ा कर सकता हूँ, इसलिए, मैं छोटा कर सकता हूँ। तो, यीशु के साथ आपके पास एक राज्य की अवधारणा है कि यीशु लोगों के बीच जाकर उन्हें ठीक कर रहे हैं। एक अंधा आदमी जो अपने पूरे जीवन में नहीं देख सकता और अचानक, यीशु उसकी आँखों को ठीक कर देते हैं। एक आदमी जिसका एक हाथ अपंग है और

वह उस समाज में बहुत अच्छी तरह से काम नहीं कर सकता है जब उसका एक हाथ अपंग होता है, और यीशु कहते हैं, "तुम ठीक हो गए हो।" एक आदमी जिसका नौकर, सूबेदार के नौकर के मामले में, वह कठिन समय से गुज़र रहा है, वह बीमार है या कुछ और और राक्षसों से ग्रस्त है और यीशु, वचन बोलते हैं और उसे ठीक करते हैं। यह यीशु की करुणा है। पतरस की सास के साथ भी, यीशु ने उसे छुआ और उसका बुखार चला गया। तो, आपको परमेश्वर के राज्य के टूटने का एहसास होता है। और वैसे, यह तब भी होता है जब यीशु अंजीर के पेड़ के पास जाता है और वह अंजीर के पेड़ को शाप देता है, और वह कहता है, "अंजीर के पेड़, तुमने अंजीर नहीं उगाए," और वह अंजीर के पेड़ को शाप देता है और पेड़ जड़ से सूख जाता है। दूसरे शब्दों में, यीशु आता है और आपको परमेश्वर के राज्य का प्रवेश मिलता है। आप उस राज्य की पहले से ही उपस्थिति को देखते हैं जो यीशु आपको देता है। राज्य पहले से ही यहाँ है, और यीशु यहाँ हैं, और आप यीशु की घुसपैठ को देखते हैं, राज्य आ रहा है।

फिर भी, इसका एक "अभी नहीं" पक्ष भी है। हम एक परिपूर्ण स्थिति में नहीं रहते हैं, सब कुछ परिपूर्ण नहीं है, सभी लोग ठीक नहीं होते हैं। हम सभी को जल्द या बाद में मरना ही है। इसलिए, मृत्यु है, बीमारी है, ये सभी चीजें हैं। इसलिए, राज्य एक निश्चित अर्थ में पहले से ही यहाँ है, लेकिन यह अभी भी नहीं है। यह डेव मैथ्यूसन, जॉर्ज लैड और अन्य लोगों द्वारा विकसित एक महान विषय है, यह पहले से ही है लेकिन अभी तक नहीं है। इसलिए, यीशु के साथ, आप देखते हैं, आपको यीशु के उपचार और यीशु के चमत्कारों में परमेश्वर के राज्य की एक झलक मिलती है। मार्क की पुस्तक में, ये "धमाका, धमाका" प्रकार के चमत्कार हैं, और फिर भी, हर कोई ठीक नहीं होता है। पाप, बीमारी और मृत्यु अभी भी राज करते हैं। लेकिन एक दिन आने वाला है, प्रकाशितवाक्य 21 और उसके बाद, जब कोई बीमारी नहीं होगी, और बीमारी और मृत्यु दूर हो जाएगी, और सभी आँसू पोंछ दिए जाएँगे। एक दिन आने वाला है जब परमेश्वर का राज्य, जैसा कि हमने देखा है, जैसा कि डॉ. एलेन फिलिप्स इसे "अहसास" कहना पसंद करते हैं, हमने देखा है कि राज्य का यह अहसास, पूर्वाभास है। यीशु ने हमें राज्य के आने की एक झलक दिखाई है और हम इसे देखते हैं, और यह अद्भुत है। वह राज्य आने वाला है, प्रकाशितवाक्य 21 और 22, और किसी दिन, पाप और बीमारी समाप्त हो जाएगी। और वह एक महान दिन होने वाला है, और हम उसका बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं।

आई. दो भौगोलिक “विरोधाभास” - टायर और सिडोन [101:47-105:29]

अब, हम मार्क की पुस्तक को समाप्त करने जा रहे हैं, इसमें यहाँ बस कुछ और मिनट लगेंगे। मैं केवल उन बातों से निपटना चाहता हूँ जिन्हें मूल रूप से मार्क की पुस्तक में विरोधाभास माना जाता है, और यह इनमें से कुछ भौगोलिक मुद्दों से संबंधित है। दो भौगोलिक मुद्दे हैं जिनके बारे में आलोचकों का कहना है कि वे बाइबल में त्रुटियाँ हैं, और मैं बाइबल में पाए जाने वाले इन "विरोधाभासों" के साथ चलना चाहता हूँ। और फिर, आज बहुत से लोग भौगोलिक स्थानों में रुचि नहीं रखते हैं, लेकिन यदि आपने किसी को बताया है कि बोस्टन मेन में था या बोस्टन न्यूयॉर्क में था, तो जाहिर है कि आपने वहाँ भौगोलिक गलती की है, जब तक कि आप किसी छोटे से गाँव का उल्लेख नहीं कर रहे हैं जिसे बोस्टन कहा जाता है। तो, यहाँ हम मार्क 7:31 में हैं, और यह टायर के बारे में बात करता है और यह कहता है, "फिर यीशु टायर के आस-पास से निकलकर सीदोन गया और सीदोन से होते हुए गलील की झील तक डेकापोलिस के क्षेत्र में गया।" डेका - दस, पोलिस - शहर। लेकिन सवाल यह है: क्रम के संदर्भ में यहाँ एक विरोधाभास प्रतीत होता है। वह टायर में था, और वह गलील की झील पर जा रहा था, जो नीचे है, और वह दक्षिण जाने के लिए उत्तर की ओर जाता है। अब मैं बस इस मानचित्र पर वापस आता हूँ क्योंकि मुझे लगता है कि यह मानचित्र इसे ठीक से चित्रित करेगा। तो, यहाँ आपको टायर का शहर मिला है, और यह कहता है कि यीशु गलील की झील पर जा रहा है। इसलिए, यीशु टायर से जा रहा है, वह गलील की झील पर उतरने के लिए सीदोन तक जाता है। आलोचक कहते हैं, "एक मिनट रुको, क्या आप देख सकते हैं कि यह कितना मूर्खतापूर्ण है? यह सही नहीं है। यदि आप टायर से गलील की झील पर जा रहे हैं, तो आप यहाँ से होकर नीचे जाएँगे, दक्षिण-पूर्व, उत्तर की ओर नहीं।" यीशु सीदोन तक जाता है और फिर नीचे आता है, और लोग कहते हैं कि यह बाइबल में एक त्रुटि है, यह एक विरोधाभास है। खैर, यह बहुत दिलचस्प है कि 2 शमूएल में, यह वास्तव में अजीब तरह का है। 2 शमूएल 24:6, दाऊद के लोग जनगणना कर रहे हैं। दाऊद ने जनगणना की और यह एक बुरी बात थी जो उसने की। तो, 2 शमूएल 24:6, "दाऊद के लोग जो जनगणना कर रहे थे, सोर से सीदोन गए, और फिर वापस आ गए।" तो, आपके पास मूल रूप से वही रास्ता है जो यीशु ने लिया था, जिसे 2 शमूएल 24 में दर्ज किया गया है। तो, मैं जो कह रहा हूँ वह यह है

कि ये लोग जगह-जगह चले गए; वे जानते हैं कि ये चीज़ें कहाँ हुईं। और इसलिए, वे जानते थे, और यह 2 शमूएल 24 में कहा गया था, साथ ही यीशु का सोर से सीदोन जाना, गलील की झील में जाना, उनके लिए कोई बड़ी बात नहीं थी। यह ऐसा है जैसे मैंने कहा कि मैं अल्बानी, NY जाने के लिए रूट 90 लेना चाहता हूँ और मैं बोस्टन के उत्तर में हूँ। और आप मुझे बताते हैं कि मुझे रूट 90 लेने के लिए दक्षिण जाना होगा, लेकिन, नहीं, मैं उत्तर जाता हूँ। मैं उत्तर क्यों जाता हूँ? मैं रूट 495 पर जाने के लिए उत्तर जाता हूँ क्योंकि अगर मैं लगभग 5 मील उत्तर की ओर जाता हूँ और रूट 495 पकड़ता हूँ, तो मैं बोस्टन के सभी ट्रैफ़िक से बच सकता हूँ, कम से कम दिन के अधिकांश समय में। दूसरे शब्दों में, मुझे पश्चिम और दक्षिण की ओर जाना चाहिए, लेकिन इसके बजाय मैं उत्तर की ओर जाता हूँ ताकि मैं रूट 495 पकड़ सकूँ और वहाँ बेहतर तरीके से पहुँच सकूँ। तो, कुछ निश्चित रास्ते हैं जो लोग लेते हैं और टायर से सिडोन तक जाने और फिर नीचे जाने के बीच का यह संबंध एक सामान्य रास्ता है। तो, यह शास्त्र में कोई विरोधाभास नहीं है, यह कोई बड़ी बात नहीं है, और उन्हें थोड़ा शांत होने की ज़रूरत है।

वायुसेना. दो भौगोलिक "विरोधाभास" - गेरासा और गलील सागर [105:29-108:56]

अब, मार्क 5 में गेरासा, एक दुष्टात्मा है जिसके अंदर लीजन नामक एक दुष्टात्मा है। यीशु ने दुष्टात्माओं को सूअरों में से निकाल दिया और सूअर गलील की झील में भाग गए और डूब गए, वह गेरासेन दुष्टात्मा है। दिलचस्प बात यह है कि लोग कहते हैं, एक मिनट रुकिए, यह गेरासेन दुष्टात्मा गेरासा से था, समस्या यह थी कि गेरासा गलील की झील पर नहीं था, और इसलिए वे कहते हैं, यहाँ बाइबिल में एक और छोटी सी खामी है, वह भौगोलिक रूप से। गेरासा गलील की झील पर नहीं है। इसलिए, वे कहते हैं, यह बाइबिल में एक विरोधाभास है। एक निश्चित पहलू में, वे सही हैं। यदि आप मानचित्र को देखते हैं, और आप गलील की झील पर आते हैं, और आपको गेरासा मिलता है और आप देखते हैं कि यह गलील की झील से लगभग 25, 30 मील दूर है। इसलिए, गेरासा गलील की झील पर नहीं है। अब, लोगों ने इस पर ध्यान दिया है। सबसे पहले, यह संभव है कि यहाँ कोई संबंध हो, कि लोग हर समय गलील के समुद्र में आते-जाते रहते हैं, गेरासा के लोग गलील के समुद्र में क्यों जा रहे हैं? वहाँ नीचे पानी है! तो, वे यहाँ हर समय आते-जाते रहेंगे, इसलिए स्थान काफी करीब हैं, भले ही वे

एक-दूसरे के ठीक ऊपर न हों। मेरा एक साला है जो पेंसिल्वेनिया में एक प्रसिद्ध झील पर रहता है। अब, वह झील के ठीक किनारे नहीं रहता है, वह झील के किनारे रहता है, लेकिन उसके पास झील के सामने सड़क के उस पार एक घर है। उसके पास एक सुविधा है जिसके तहत वह अपनी नाव झील पर रख सकता है और वह नीचे जाकर झील तक पहुँच सकता है। तो, सुविधा कहती है, मूल रूप से वह झील के ठीक किनारे नहीं रहता है, लेकिन उसके पास झील से जुड़ने का अवसर हो सकता है। इसलिए, यह बहुत संभव है कि गेरासा के इन लोगों के पास झील तक पहुँच का अधिकार था, क्योंकि वे एक प्रमुख शहर थे, और उन्हें झील तक पहुँचने का अधिकार दिया गया था। अब, ये लोग इस क्षेत्र को जानते थे, वे इस क्षेत्र में चलते थे, और इसलिए गेरासा के इन लोगों के पास ये अधिकार थे और झील के नीचे

गेरासेन लोग थे। इस साल एक छात्र ने एक ऐसा मुद्दा उठाया जो मुझे भी दिलचस्प लगा। उन्होंने कहा कि शायद गेरासा यहाँ का मुख्य शहर है, और उन्होंने कहा कि अगर कोई आपसे पूछे कि आप कहाँ से हैं और आप वारसॉ, इंडियाना कहते हैं। अब, अगर मैं वारसॉ से नहीं हूँ तो मैं वारसॉ क्यों कहूँगा? मैं वास्तव में विनोना लेक से हूँ। लेकिन अगर मैं विनोना लेक कहता हूँ, तो यह इतना छोटा शहर है कि कोई भी वास्तव में विनोना लेक की परवाह नहीं करता; यह एक बहुत छोटा और ग्रामीण शहर है। वारसॉ को हर कोई जानता है, इसकी आबादी 25,000 या 35,000 है। इसलिए, अगर आप उस क्षेत्र को जानते हैं, तो आप वारसॉ को भी जानते होंगे, हालाँकि यह कोई बड़ा शहर नहीं है, लोगों के पास वारसॉ को जानने का मौका होगा, जबकि विनोना लेक को कोई नहीं जानता जब तक कि आप बिली संडे को न जानते हों। इसलिए, मैं बस इतना कह रहा हूँ कि उन्होंने गेरासा को उस क्षेत्र का मुख्य शहर बताया होगा।

ए.जी. मार्क का अंत (मरकुस 16:9ff) - प्रमुख पाठ्य भिन्नता [108:56-111:55]

अब, एक और बात, फिर हम मार्क की पुस्तक पर इस चर्चा को समाप्त करेंगे। मार्क की पुस्तक का अंत, अध्याय 16:8 में समाप्त होता है, आपके अधिकांश संस्करण वहाँ एक रेखा खींचते हैं और हम एक प्रमुख पाठ्य भिन्नता देखते हैं। हमने पाठ्य भिन्नताओं के बारे में बात की थी, अगर आपको याद हो, तो पाठ्यक्रम की शुरुआत में। यह सबसे बड़ी भिन्नताओं में से एक है। मार्क 16:8 में,

यह यीशु के साथ हुई पुनरुत्थान के बाद की घटनाओं के बारे में बताता है। यदि आप अध्याय 16:8 पर समाप्त करते हैं, तो ये भयभीत महिलाएँ हैं; ये महिलाएँ मौत से डरी हुई हैं। यीशु मृतकों में से जी उठे और ये महिलाएँ यह पता लगाने की कोशिश कर रही हैं कि क्या हुआ और वे मौत से डरी हुई हैं। मैं आपको यह सुझाव देने की कोशिश कर रहा हूँ कि महिलाओं का डर और काँपना, संभवतः लेखक के रूप में मार्क और रोमनों के दर्शकों को भी दर्शाता है। तो, वास्तव में, वह छोटा अंत मार्क की पुस्तक के लिए एक बहुत अच्छा अंत है। लेकिन मार्क की पुस्तक वहाँ से आगे बढ़ती है और मार्क की पुस्तक में इस लंबे अंत में वर्णन करती है कि कुछ ईसाई साँपों को उठाएँगे और वे उन्हें नुकसान नहीं पहुँचाएँगे। इसलिए, यह साँपों को संभालने वालों और साँपों को संभालने वाले इन लोगों के लिए एक आधार बन जाता है। बाइबल कहती है कि साँप आपको परेशान नहीं करेंगे, इसलिए एक रैटलस्नेक को आपको काटने दें और देखें कि भगवान चमत्कार करते हैं या ऐसा कुछ। मैं बस इतना कह रहा हूँ कि आपको बहुत सावधान रहना होगा, खासकर जब कोई चीज़ एक प्रमुख पाठ्य भिन्नता हो। क्या बाइबल हमें साँपों को उठाने के लिए कहती है? पवित्रशास्त्र में कोई अन्य स्थान हमें ऐसा नहीं बताता है। यदि यह केवल एक पाठ्य भिन्नता में ऐसा कहता है, तो किसी भी प्रमुख धार्मिक बिंदु को पाठ्य भिन्नता पर आधारित न करें। इसलिए, मुझे लगता है कि आपको साँपों को उठाने और उन्हें आपको काटने देने और यह सोचने के बारे में बहुत सावधान रहना चाहिए कि आप बच जाएँगे। यह एक पाठ्य भिन्नता वाली बात है, पवित्रशास्त्र में यही एकमात्र स्थान है जहाँ ऐसा होता है।

अब, वैसे, जब यह यीशु के हमारे पापों के लिए मरने की बात करता है, तो क्या बाइबल इस बारे में हर जगह बात करती है? आपने इसे सौ स्थानों पर बार-बार कहा है; हमारे सभी प्रमुख सिद्धांत ठोस ग्रंथों पर आधारित हैं, इन पाठ्य भिन्नताओं के बिना। इसलिए, मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि पवित्रशास्त्र में उन प्रमुख बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित करें जिन्हें हमने बार-बार किया है, और पाठ्य भिन्नताओं को शामिल न करें। अपने दर्शन को अद्वितीय पाठ्य भिन्नताओं पर आधारित न करें। यह एक अद्भुत अंश है, लंबा अंत है, इसे पढ़ना अच्छा है, लेकिन किसी ऐसी चीज़ पर बहुत अधिक ज़ोर न दें जो पूरी तरह से अलग और अजीब हो।

जेनी मचाडो द्वारा लिखित

बेन बोडेन द्वारा संपादित
रफ द्वारा संपादित टेड हिल्डेब्रांट द्वारा संपादित